केनरा बैंक की
त्रैमासिक
हिंदी गृह पत्रिका

केनरा ज्योति

अंक : 30

अक्तूबर – दिसंबर 2021

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

ग्रामीण विकास व बैंकिंग

डिजिटल मुद्राएं

बैंकिंग पारिभाषिक शब्दावली

साइबर सुरक्षा

संगठनात्मक विकास व टीम कार्य

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

दिनांक 25.11.2021 को आयोजित प्रधान कार्यालय की 182वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान बैंक की गृह पत्रिका 'केनरा ज्योति' के 29वें अंक का विमोचन करते हुए हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एल.वी. प्रभाकर। साथ में श्री एल.वी.आर. प्रसाद, मु म प्र, मानव संसाधन विभाग, श्री एस. शंकर, मु म प्र, श्री आलोक कुमार अग्रवाल, म प्र, श्री एच.एम. बसवराज, उ म प्र व अन्य स्टॉफ सदस्य उपस्थित हैं।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा दिनांक 30.10.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, रोहतक के राजभाषाई निरीक्षण के दौरान समिति के माननीय सदस्यों के साथ हमारे बैंक के कार्यपालकगण एवं अधिकारीगण।

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम
Canara Bank
A Government of India Undertaking
Together We Can

श्री एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक
एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

श्री एल.वी.आर. प्रसाद
मुख्य महा प्रबंधक

श्री शंकर एस.
मुख्य महा प्रबंधक

श्री एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

संपादन सहयोग

श्री एन.एस. ओमप्रकाश
श्री बिबिन वर्गीस
श्री डी. बालकृष्ण
सुश्री रीनू मीना
श्रीमती कीर्ति पी.सी.
श्रीमती शिवानी तिवारी
श्रीमती हर्षा के.आर.
श्री संजय गौतम
श्री विजय कुमार
श्रीमती आर.वी. रेखा

बिक्री के लिए नहीं

प्रकाशन : केनरा बैंक,
राजभाषा अनुभाग,
मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय
112, जे.सी. रोड,
बेंगलूरु - 560 002
दूरभाष : 080-2223 9075
वेबसाइट :
www.canarabank.com

केवल आंतरिक परिचालन हेतु
* * *
पत्रिका में अभिव्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। केनरा बैंक का उनसे सहमत होना ज़रूरी नहीं है।

पृष्ठ संख्या	विषय सूची

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 2
मुख्य संपादक का संदेश 3
ग्रामीण विकास के क्षेत्र में वाणिज्यिक बैंकों की भूमिका 4
बैंकिंग के भविष्य के सापेक्ष डिजिटल मुद्राएं 6
नीलकंठ केदारनाथ – यात्रा वृतांत 9
हिंदी में बैंकिंग पारिभाषिक शब्द : स्वरूप, संरचना, वर्गीकरण एवं विशेषताएँ 12
नन्हें कदम आज बड़े हो गए 16
संगठन के विकास में टीम कार्य का महत्व 17
वे दिन भी क्या दिन थे 22
बैंकों में साइबर सुरक्षा 24
उमंग 28
स्वतंत्र भारत 75 वर्ष : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता 29
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला : 33
मस्ती भरा है समां 36
अंचल समाचार 38
कमिटमेंट, कैपिटल गेन और क्रेटा 48

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय केनाराइट्स,

'केनरा ज्योति' के 30वें संस्करण के माध्यम से आपसे पुन: संवाद करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। साथियों, जैसा कि आप जानते हैं, हमारा बैंक अपनी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा के लिए जाना जाता है और उत्कृष्ट ग्राहक सेवा का प्रमुख स्तंभ जन सामान्य की अपनी मातृभाषा है, तो ऐसे में भारत सरकार के राजभाषा संबंधी संवैधानिक नियमों के कार्यान्वयन के प्रति केनरा बैंक सदैव सचेत रहा है और साथ ही सही मायने में ग्राहक सेवा की उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए ग्राहकों को उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने को लेकर भी प्रतिबद्ध है।

वर्तमान में हम कोविड–19 के अत्यधिक उत्परिवर्ती स्वरूप ओमिक्रोन के रूप में महामारी से हो रहे संक्रमण के तेजी से बढ़ते हुए मामले देख रहे हैं। सरकार ने इस संबंध में पहले ही नए दिशा–निर्देश जारी कर दिए हैं ताकि वायरस के प्रसार को रोकने के लिए निवारक उपाय अपनाए जा सकें। मैं आप सभी को पूरी गंभीरता के साथ यह सलाह देता हूँ कि सरकार द्वारा निर्धारित सभी स्वास्थ्य और सुरक्षा दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करें। यह आपके साथ–साथ आपके प्रियजनों और अपने मूल्यवान ग्राहकों के हित में है।

वर्तमान परिदृश्य में हमारे डिजिटल बैंकिंग प्लेटफॉर्म के सभी आयामों के अधिकतम प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि हमारे ग्राहक अपने घरों में सुरक्षित रहकर सभी ज़रूरी बैंकिंग सेवाएं पा सकें और शाखाओं में ग्राहकों की संख्या कम करके हम अपने ग्राहकों की पूरी सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए उन्हें इष्टतम सेवाएं उपलब्ध करा सकें। आपकी प्रतिबद्धता और कार्यनिष्ठा के बल पर हम महामारी की पिछली दो लहरों के दौरान कोविड संबंधी सभी निवारक उपायों को अपनाते हुए अपनी अनवरत सेवाएं देने में सफल रहे हैं और आपकी इसी कार्यनिष्ठा, समर्पण और प्रतिबद्धता का नतीजा है कि आज केनरा बैंक ने देश का तीसरा सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक बनने का महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है।

आपकी प्रतिबद्धता और प्रयासों के परिणामस्वरूप, बैंक ने चालू वित्तीय वर्ष में अब तक इक्विटी पूंजी द्वारा ₹2500 करोड़, बेसल III अनुपालित अतिरिक्त टियर I बांड जारी करके ₹3000 करोड़ और बेसल III अनुपालित टियर II बांड जारी करके ₹2500 करोड़ सफलतापूर्वक जुटाए हैं। इसके अलावा, अतिरिक्त टियर I बांड जारी करके ₹1000 करोड़ की अतिरिक्त पूंजी जुटाने की योजना पाइपलाइन में है। इससे हमने बैंक के पूंजी आधार को मजबूत किया है और यह केनराइट्स पर सम्मानित निवेशकों के विश्वास को दर्शाता है। हमें क्रिसिल, आईसीआरए, इंडिया रेटिंग्स और केयर रेटिंग्स से हमारे एटी1 बॉन्ड के लिए चालू वित्त वर्ष में रेटिंग अपग्रेडेशन भी प्राप्त हुआ है। मैं इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए आप सभी को बधाई देता हूं।

आपके ईमानदार प्रयासों और समर्पण ने हमें 30 सितंबर 2021 तक ₹17.19 लाख करोड़ के वैश्विक कारोबार को पार करके प्रमुख व्यावसायिक मील के पत्थर को हासिल करने में मदद की है और हम दिसंबर 2021 में इस आंकड़े को पार करने की उम्मीद करते हैं। बैंक ने आपकी उत्कृष्ट ग्राहक सेवा के कारण कासा, खुदरा सावधि जमा और खुदरा ऋण पोर्टफोलियो में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप आने वाली तिमाहियों में और भी बेहतर वित्तीय परिणाम प्राप्त करने के लिए सकारात्मक गति बनाए रखेंगे। इसके अलावा, हमें अनर्जक आस्ति(एनपीए) प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने और वसूली के प्रयासों में तेजी लाने की आवश्यकता है। हम एक प्रगतिशील बैंक हैं और परिस्थितियों के अनुकूल हमने आरबीआई के सह–उधार मॉडल (सीएलएम) के तहत प्राथमिकता क्षेत्र को एनबीएफसी के साथ मिलकर उधार देने के उद्धेश्य से मेसर्स इंडियाबुल्स कमर्शियल क्रेडिट लिमिटेड के साथ समझौता किया है और अन्य एनबीएफसी के साथ भी इसी तरह की टाई–अप व्यवस्था की तलाश में हैं।

हमारे जमा पोर्टफोलियो को मजबूत करने के लिए, दो जमा योजनाएं, 'केनरा अमृत–75' और 'केनरा यूनीक' और अधिकतम सरकारी कारोबार के प्रसार के लिए एक बचत उत्पाद 'केनरा एसबी पीएफएमएस' की शुरुआत की है। इसके अलावा, ग्रामीण/अर्ध–शहरी क्षेत्रों में स्वर्ण ऋण की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए बैंक ने चालू वित्त वर्ष के दौरान 265 नए गोल्ड लोन प्लाजा खोले हैं, जिससे पूरे भारत में गोल्ड लोन प्लाजा की कुल संख्या 365 हो गई है। इन पहलों से बैंक के प्रदर्शन में और अधिक बढ़ोतरी होगी।

'केनरा ज्योति' पत्रिका हमारे कर्मचारियों को बहुआयामी रचनाओं से रूबरू कराती है जिसमें बैंकिंग, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक आलेख और कृतियां इत्यादि शामिल होती हैं, जिससे हमारे लेखकों के साथ ही पाठकों का भी बहुमुखी विकास होता है। सभी लेखकों को और प्रकाशन टीम को इसके वर्तमान अंक के लिए बधाई !

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

एल.वी. प्रभाकर
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

मुख्य संपादक का संदेश

प्रिय साथियो,

'केनरा ज्योति' पत्रिका के 30वें अंक के रूप में राजभाषा हिंदी में अनेक रोचक और ज्ञानवर्धक आलेखों, कहानियों व कविताओं इत्यादि से परिपूर्ण इस पत्रिका को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। साथियों, 'केनरा ज्योति' के आने वाले हर एक संस्करण के साथ ही लेखक वर्ग की परिपक्वता बढ़ती जा रही है, जिसे आप पत्रिका के इस अंक में उनके द्वारा रचित आलेखों, कविताओं इत्यादि को पढ़कर महसूस कर पाएंगे।

साथियों, हिंदी ही एकमात्र भाषा है जो पूरे भारत को एकसूत्र में बांधने में सक्षम है, इस बात का अहसास चाहे सरकारी क्षेत्र हो या निजी क्षेत्र, आज सभी को हो रहा है। इसी का नतीजा है कि बड़े से बड़े सेवा प्रदाता आज हिंदी में अपनी सेवाएं देने को विवश हैं क्योंकि हिंदी एक बड़े ग्राहक वर्ग के लिए सुविधाजनक होने के साथ ही सेवा प्रदाताओं के कारोबार को बढ़ाने में भी मददगार साबित हो रही है।

साथियों, अपने ग्राहकों से अपनापन दिखाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका ग्राहकों से उनकी अपनी भाषा में बात करना है, इसलिए भारत के विभिन्न राज्यों में बोली जाने वाली भाषाओं की उपेक्षा किए बिना ग्राहकों से उनकी मातृभाषा में बात करना अपने ग्राहक आधार को मजबूत करने में प्रमुख भूमिका अदा करता है और यही कारण है कि केनरा बैंक ग्राहक सेवा की दृष्टि से भारत का एक उत्कृष्ट बैंक है। आपके द्वारा प्रदर्शित मजबूत कार्यनैतिकता, समर्पण और प्रतिबद्धता के फलस्वरूप केनरा बैंक ने भारत में तीसरा सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक बनने का महत्वपूर्ण मील का पत्थर हासिल किया है।

वर्तमान प्रतिस्पर्धी बैंकिंग परिदृश्य में प्रतिबद्ध संगठन सेवी के रूप में हम भाषाई सौहार्द के साथ अपने कार्यनिष्पादन पर जोर देते हुए सफलता की सीढ़ियां चढ़ते जा रहे हैं। केनरा बैंक को देश का सर्वश्रेष्ठ बैंक बनाने की दिशा में हमें यह गति बरकरार रखनी है और संगठन को सर्वोपरि रखते हुए सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ते जाना है।

पत्रिका में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों को मेरी ओर से साधुवाद! आशा करता हूँ, भविष्य में भी 'केनरा ज्योति' के लिए आपकी एक से बढ़कर एक रचनाएं प्राप्त होती रहेंगी, साथ ही पत्रिका की बेहतरी के लिए आपके सुझाव भी सादर आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित,

एच.एम. बसवराज
उप महा प्रबंधक

आलेख

ग्रामीण विकास के क्षेत्र में वाणिज्यिक बैंकों की भूमिका

हमारे देश की जनसंख्या का आधे से भी अधिक भाग आज भी ग्रामीण इलाकों में अपना जीवन–यापन कर रहा है, जहां समाज में रहने के लिए ज़रूरी मूलभूत आवश्यकताएं अब काफी हद तक ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुंच रही हैं।

बैंकों के राष्ट्रीयकरण से पहले तक ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग, साहूकारों के माध्यम से ही की जाती थी जिसमें बेचारे अनपढ़ ग्रामीण पिसते रहते थे और उनका पूरा जीवन उन साहूकारों का कर्जदार बने रहने में ही उनकी गुलामी करते–करते गुज़र जाता था। बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद जब ग्रामीण क्षेत्रों में भी बैंकिंग पहुंची, वो बैंकिंग जो पारदर्शक थी, इतनी साफ सुथरी कि उन अनपढ़ ग्रामीणों को भी समझने में कठिनाई नहीं होती थी।

बैंकों का ग्रामीण क्षेत्रों में जाने का एक मुख्य कारण यह था कि भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास किसी सीमा तक ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर ही निर्भर करता है। ग्रामीण लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि होता है और कृषि के विकास से ही ग्रामीण विकास संभव है।

बैंकों ने ग्रामीण लोगों को शहरी लोगों का दर्जा देने के लिए किसी भी क्षेत्र को पीछे नहीं छोड़ा है। बैंकों ने सरकारी योजनाओं के तहत मिलने वाले ऋण से ग्रामीण लोगों का विकास किया है। जिन सरकारी योजनाओं के तहत ग्रामीण लोगों को लाभ पहुंचा है, उनमें मुख्य रूप से निम्न योजनाएं सम्मिलित हैं।

(I) एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम (आईआरडीपी)
(ii) न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम (एमएनपी)
(iii) सूखाग्रस्त क्षेत्र कार्यक्रम (डीपीएपी)
(iv) गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम (आईएएपी)
(v) सीमांत कृषक एवं कृषि श्रम एजेंसी (एमएफ व एएलए)
(vi) अधिकार क्षेत्र विकास कार्यक्रम (सीएडीपी)
(vii) गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (आईएडीपी)
(viii) लघु कृषक विकास एजेंसी (एसएफडीए)
(ix) जनजातीय विकास एजेंसी (टीडीए)
(x) राष्टीय ग्रामीण रोज़गार कार्यक्रम (एनआरईपी)
(xi) पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम (एचएडीपी)
(xii) सामुदायिक विकास कार्यक्रम (सीडीपी)

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त सन् 1979 में सरकार ने ग्रामीण नवयुवकों के लिए उनके स्वरोज़गार प्रशिक्षण की राष्ट्रीय योजना भी चलाई जिसको ट्राइसेम (TRYSEM) (स्वरोज़गार के लिए ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण) के नाम से जाना गया। इस योजना के तहत बैंकों ने लाभार्थियों को व्यापार आरंभ करने के लिए वित्तीय सहयोग प्रदान किया। इस योजना के अंतर्गत भी अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों को प्राथमिकता के तौर पर सहायता प्रदान की गई थी।

अवनीश कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
नोएडा सेक्टर–15 शाखा

ग्रामीण विकास और महिलाएं :

बैंकों ने ग्रामीण महिलाओं के विकास के लिए हमेशा सहायता प्रदान की है। ग्रामीण महिलाएं बैंकों से सहायता मिलने के कारण ही घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर अब कृषि संबंधी कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने लगी हैं। हालांकि, सभ्यता के आरंभ से ही यदि ऐसा कोई क्षेत्र है जिसमें स्त्रियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है अथवा उसमें उनकी बड़ी संख्या में सहभागिता रही है, तो वह कोई और नहीं बल्कि कृषि का ही क्षेत्र है। आंकड़े बताते हैं कि कृषि कार्यों में सक्रिय पुरुषों की सहभागिता 63% है जबकि महिलाओं की 78% है। कृषि से संबंधित हर मोर्चे पर वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। महिलाएं बुआई, सिंचाई, खाद बनाने, साग सब्जी उगाने, फलों के पौधे लगाने आदि कार्यकलापों में सहभागिता कर रही हैं। खेतों से फसल निकालने तथा

उसके भंडारण में वे पुरुषों की मदद कर रही हैं। अत: हम कह सकते हैं कि कृषि संबंधी अधिकांश कार्य महिलाओं द्वारा ही पूर्ण किए जा रहे हैं।

अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों जैसे केरल, तमिलनाडु और कृषि वानिकी में महिलाएं मुख्य भूमिका अदा कर रही हैं। राजस्थान और कर्नाटक के शुष्क क्षेत्रों में प्रोसोपिस सिंरेरिया पद्धति उनके द्वारा ही संरक्षित है। कॉफी और चाय के बागानों में भी महिलाओं का योगदान अत्यधिक है।

इसके अलावा, फसल के बाद नारियल और सुपारी का संग्रहण करने और उसे बाहर भेजने, नाजुक सुपारी को काटने, उबालने, साफ करने और सुखाने, काजू फल को चुनने, सुखाने, छिलका निकालने का काम महिलाएं ही कर रही हैं।

डेयरी के पशुओं का सारा प्रबंधन जैसे – चारा काटना, भूसा तैयार करना, दूध दूहना, पशुओं को नहलाने, गोबर के उपले बनाना आदि सभी कार्य महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। इसके अलावा, सूखी घास इकट्ठी करना, खेतों से साग–सब्जी तोड़ना, बीजारोपण कार्य भी महिलाएं ही करती हैं और तो और, आजकल महिलाएं खेती के बड़े से बड़े कामों की देखभाल के साथ–साथ खेती संबंधी कार्यों के फैसले लेने में भी सहयोग दे रही हैं।

आज ग्रामीण बैंकिंग का काफी उपयोग हो रहा है, सफल भी है यह बैंकिंग, क्योंकि ग्रामीण बैंकिंग घाटे का सौदा है ही नहीं। उसमें हर तरह से फायदा ही फायदा है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग करने का मतलब सिर्फ सामाजिक और आर्थिक उत्तरदायित्वों का वहन करने तक ही सीमित बनकर नहीं रह गया है।

हमारे देश की अर्थव्यवस्था में पिछले 70 वर्षों में उद्योग, विज्ञान, वाणिज्य और तकनीकी विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। फिर भी हमारी अर्थव्यवस्था मूल रूप से खेती पर ही आधारित है। हमें ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण वितरण को जारी रखना है ताकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार आए।

समस्याएं एवं निदान :

बैंकों की ओर से ग्रामीण विकास सुनिश्चित करने में बहुत सी समस्याएं भी महसूस की गई हैं, जैसे–ग्रामीण क्षेत्रों में पदस्थ कर्मचारी शहरी संस्कृति में पले बढ़े होते हैं, वो लोग ग्रामीण संस्कृति से अनभिज्ञ होते हैं। जब तक बैंक कर्मचारी ग्रामीण लोगों के सुख–दु:ख में शरीक नहीं होंगे, उनसे भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ेंगे, तब तक ग्रामीण लोगों के साथ बैंकिंग करने के सारे प्रयास उतने कारगर साबित नहीं होंगे।

आज भी गांव में सेठ साहूकार या महाजन का आधिपत्य है क्योंकि यदि गांव में कोई सुख–दु:ख होता है तो वे लोग ही वहां पहुंचने वाले पहले व्यक्ति होते हैं। बैंक कर्मचारी या तो वहां जाएगा ही नहीं और यदि जाएगा भी तो अंत में। तब तक वह साहूकार उस पर अपना प्रभाव छोड़ चुका होगा। हालांकि, इस तरह ग्रामीण लोगों का शोषण ही होता है, क्योंकि उनकी ब्याज दरों का मीटर काफी तेज गति से घूमता है।

आज भी ग्रामीण शाखाओं में ऋण देने की प्रक्रिया को जटिल बनाया हुआ है तो ग्रामीण बेचारे उन्हीं सेठ / साहूकारों के पास जाने पर मजबूर हैं। ज़रूरत है हमें ग्रामीण लोगों का विश्वास जीतने की। यदि उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने और उनकी घरेलू एवं आर्थिक समस्याओं का निदान करने का प्रयास करें तब कोई आश्चर्य की बात नहीं कि बैंकिंग कारोबार में अभूतपूर्व परिवर्तन आएगा।

हमें ग्रामीण क्षेत्रों से संसाधन जुटाकर उनके ही क्षेत्रों में औद्योगिक विकास करने से बैंकों को बहुत लाभ पहुंचेगा। कई जगह बैंकों ने ग्रामीण क्षेत्रों में जनहितकारी कार्य करके ग्रामीण लोगों के दिलों–दिमाग में जगह बनाई है जैसे – बस स्टॉप पर टिन शेड तथा सार्वजनिक प्याऊ लगवाने के ज़रिए तपती गर्मी में ग्रामीणों को बहुत राहत पहुंचाई है। फलस्वरूप, ग्रामीण क्षेत्र के लोग संबंधित बैंक को भी सहयोग करने से पीछे नहीं हटते।

बहुत सारी जगह बैंक बच्चों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित करते हैं, रक्तदान शिविर आयोजित करते हैं, मुफ्त डॉक्टरी जांच कैंप आयोजित करते हैं, उससे ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक की छवि निखरती है तथा वो कहीं न कहीं बैंकिंग कारोबार को ही परिलक्षित करती है।

ग्रामीण लोग इतने सीधे–सादे होते हैं कि आप उनकी ज़रा सी इज्ज़त कर दीजिए तो वो अपने–आप को अत्यधिक गौरवान्वित महसूस करते हैं तथा अपने जीवन स्तर को ऊंचा समझने पर मजबूर हो जाते हैं।

महानगरों तथा शहरों में तो बैंकिंग चरम सीमा पर पहुंच चुकी है। अत: हमें अधिकतर ग्रामीण इलाकों में ही बैंकिंग विकास करना है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि ग्रामीण बैंकिंग का भविष्य उज्जवल है।

आलेख

बैंकिंग के भविष्य के सापेक्ष डिजिटल मुद्राएं

हाल ही में, केंद्रीय बैंकों, अर्थशास्त्रियों और सरकारों द्वारा डिजिटल मुद्रा की अवधारणा पर व्यापक रूप से चर्चा हो रही है। मुद्रा नोटों को छोड़कर, आधुनिक वित्तीय प्रणाली में कागज़ के अन्य सभी उपयोग, चाहे वह बांड, प्रतिभूतियां, लेनदेन, संचार, पत्राचार या संदेश के रूप क्यों न हो; अब इन सबको संबंधित डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। वास्तविक तौर पर, हाल के वर्षों में लेनदेन में भौतिक नकदी के प्रयोग में गिरावट आयी है, और इसे कोविड–19 महामारी से और प्रोत्साहन मिला है। इन विकासों के परिणामस्वरूप, कई केंद्रीय बैंकों और सरकारों ने फिएट मुद्रा के डिजिटल संस्करण की खोज के प्रयासों को आगे बढ़ाया है।

आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में, मुद्रा का एक रूप है जो विशेष रूप से संप्रभु (या इसके प्रतिनिधि के रूप में एक केंद्रीय बैंक) द्वारा जारी किया जाता है। यह जारी करने वाले केंद्रीय बैंक (और संप्रभु) और धारिता सार्वजनिक संपत्ति का दायित्व है। मुद्रा कानूनी निविदा है। मुद्रा आम तौर पर कागज़ (या बहुलक) रूप में जारी की जाती है, लेकिन मुद्रा का रूप इसकी परिभाषित विशेषता नहीं है। मुद्रा का एक रूप जो केवल डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक रूप में मौजूद है और जो केंद्रीय बैंक से स्वतंत्र रूप से संचालित हो सकता है, इसे डिजिटल मुद्रा कहा जाता है। हालांकि, डिजिटल मुद्रा अवधारणात्मक रूप से बैंक नोटों से अलग नहीं हैं, डिजिटल मुद्रा की शुरुआत के लिए एक सक्षम कानूनी ढांचे की आवश्यकता होगी, क्योंकि मौजूदा कानूनी प्रावधान कागज़ी रूप में मुद्रा को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के तहत, बैंक को बैंक नोटों के मुद्दे को विनियमित करने और भारत में मौद्रिक स्थिरता हासिल करने की दृष्टि से भंडार रखने और आम तौर पर देश की मुद्रा और क्रेडिट प्रणाली को संचालित करने का अधिकार है।

भारत डिजिटल भुगतान नवाचारों के मामले में दुनिया में अग्रणी है। इसकी भुगतान प्रणाली 24X7 उपलब्ध है, खुदरा और थोक दोनों ग्राहकों के लिए उपलब्ध है, वे बड़े पैमाने पर वास्तविक समय आधारित हैं, लेनदेन की लागत शायद दुनिया में सबसे कम है, उपयोगकर्ताओं के पास लेनदेन करने के लिए विकल्पों का एक प्रभावशाली मेनू है और डिजिटल भुगतान प्रभावशाली रूप से बढ़े हैं । यूपीआई जैसी दूसरी भुगतान प्रणाली खोजना मुश्किल होगा जो एक रुपये के लेनदेन की अनुमति देता है।

राहुल पंजाबराव हाडे
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, पुणे

इस प्रकार देश में डिजिटल भुगतान के बढ़ते प्रसार के साथ–साथ नकद उपयोग में निरंतर रुचि, विशेष रूप से छोटे मूल्य के लेनदेन के लिए एक अनूठा परिदृश्य है। जिस हद तक नकदी के लिए वरीयता है, भुगतान के डिजिटल तरीकों के लिए एक असुविधा का प्रतिनिधित्व करती है, डिजिटल मुद्रा में इस तरह के नकद उपयोग को बदलने की संभावना नहीं है। भारत की उच्च मुद्रा से जीडीपी अनुपात में डिजिटल मुद्रा का एक और लाभ है। जिस हद तक बड़े पैमाने पर नकदी के उपयोग को डिजिटल मुद्रा द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है, मुद्रा की छपाई, परिवहन, भंडारण और वितरण की लागत को कम किया जा सकता है।

डिजिटल मुद्रा पारिस्थितिकी तंत्र साइबर हमलों के लिए समान जोखिम में हो सकता है क्योंकि वर्तमान भुगतान प्रणाली सामने आ रही है । इसके अलावा, कम वित्तीय साक्षरता वाले देशों में, डिजिटल भुगतान संबंधी धोखाधड़ी में वृद्धि डिजिटल मुद्रा में भी

फैल सकती है। इसलिए डिजिटल मुद्रा से निपटने वाले किसी भी देश के लिए साइबर सुरक्षा के उच्च मानकों और वित्तीय साक्षरता पर समानांतर प्रयासों को सुनिश्चित करना आवश्यक है। अर्थव्यवस्था में डिजिटल मुद्रा का समावेश भी प्रौद्योगिकी तैयारियों के अधीन है। जनसंख्या पैमाने पर डिजिटल मुद्रा प्रणाली का निर्माण हाई स्पीड इंटरनेट और दूरसंचार नेटवर्क के विकास और डिजिटल मुद्रा में भंडारण और लेनदेन के लिए आम जनता के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी की व्यापक पहुंच सुनिश्चित करने पर निर्भर है। विकासशील देशों में, निम्न स्तर की प्रौद्योगिकी अपनाने से डिजिटल मुद्रा की पहुंच सीमित हो सकती है और वित्तीय उत्पादों और सेवाओं तक पहुंच के मामले में मौजूदा असमानताएं बढ़ सकती हैं।

डिजिटल मुद्रा की शुरुआत में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करने की क्षमता है, जैसे कि नकदी पर कम निर्भरता, कम लेन–देन की लागत के कारण उच्च पदभार, कम निपटान जोखिम। डिजिटल मुद्रा की शुरुआत से संभवत: अधिक मजबूत, कुशल, विश्वसनीय, विनियमित और कानूनी निविदा–आधारित भुगतान विकल्प का मार्ग प्रशस्त होगा। इससे जुड़े जोखिम भी हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन संभावित लाभों के खिलाफ उनका सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। यह आरबीआई का प्रयास होगा, क्योंकि हम भारत की डिजिटल मुद्रा की दिशा में आगे बढ़ते हैं, आवश्यक कदम उठाने के लिए जो भुगतान प्रणालियों में भारत के नेतृत्व की स्थिति को दोहराएगा। डिजिटल मुद्रा आने वाले समय में हर केंद्रीय बैंक के शस्त्रागार में होने की संभावना है। इसे स्थापित करने के लिए सावधानीपूर्वक अंशांकन और कार्यान्वयन में एक सूक्ष्म दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी। तकनीकी चुनौतियों का भी अपना महत्व है। जैसा कि कहा जाता है, हर विचार को अपने समय का इंतज़ार करना होगा। शायद डिजिटल मुद्रा का समय निकट है।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने कहा है कि वह अपनी डिजिटल मुद्रा के लिए एक चरणबद्ध कार्यान्वयन रणनीति की दिशा में काम कर रहा है और उपयोग के मामलों की जांच कर रहा है जहां इसे थोड़ा व्यवधान के साथ तैनात किया जा सकता है। भारत के लिए एक केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा के पक्ष में एक मजबूत तर्क देते हुए, भारतीय रिज़र्व बैंक ने कहा है कि यह सरकार के लिए मुद्रा की लागत को कम करेगा और आभासी मुद्राओं के खतरे को दूर करने में मदद करेगा। हमारी अपनी डिजिटल मुद्रा को विकसित करने से जनता को

वह उपयोग मिल सकता है जो कोई भी निजी आभासी मुद्रा प्रदान कर सकती है और इससे उस हद तक रुपये के लिए सार्वजनिक वरीयता को बरकरार रख पाना संभव होगा। यह जनता को इनमें से कुछ आभासी मुद्राओं के अनुभव के असामान्य स्तर की अस्थिरता से भी बचा सकता है। आरबीआई द्वारा जांचे गए प्रमुख मुद्दों में शामिल हैं कि क्या इनका उपयोग खुदरा भुगतान में या थोक भुगतान में भी किया जाना चाहिए, चाहे वह वितरित खाता हो या केंद्रीकृत खाता बही हो, चाहे वह टोकन–आधारित हो या खाता–आधारित हो, चाहे वह जारी होना चाहिए आरबीआई द्वारा या बैंकों के माध्यम से सीधे जारी करना हो।

अन्य प्रकार की डिजिटल मुद्राएं खुदरा क्षेत्र में हैं, और यहीं पर वास्तविक व्यवधान निहित है। घरों और व्यवसायों द्वारा दैनिक लेनदेन में खुदरा डिजिटल मुद्राओं का उपयोग किया जा सकता है, और उनके डिजाइन के आधार पर, वे हमारी मौजूदा वित्तीय प्रणाली को बेहतर बना सकते हैं। डिजिटल मुद्रा जारी करने वाले केंद्रीय बैंक द्वारा बैंक और गैर–बैंक वित्तीय संस्थान प्रभावित होंगे। समग्र रूप से वित्तीय क्षेत्र के लिए निहितार्थ हैं, क्योंकि जमा को वाणिज्यिक से केंद्रीय बैंकों में अंतरित किया जाएगा, जिससे बैंकिंग क्षेत्र के भीतर तुलनपत्र का कुल आकार कम हो जाएगा। प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए वाणिज्यिक बैंकों को कुछ नया करने की आवश्यकता होगी । वे प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों या बैंक जमा की पेशकश करना चुन सकते हैं, जिससे उधार दरों में वृद्धि हो सकती है, जो एसएमई और कम कीमत संवेदनशीलता वाले व्यक्तियों को प्रभावित करती है। यह भी संभावना है कि वाणिज्यिक बैंक अपने परिचालनों के वित्तपोषण के

लिए विदेशों से उधार लेने का विकल्प चुनेंगे, जिससे उनके अधिकार क्षेत्र में बैंकिंग क्षेत्र बाहरी कारकों के संपर्क में आ जाएगा। हालांकि, कुछ देशों ने डिजिटल मुद्रा को लागू करने के लिए कौन सी तकनीकों का उपयोग किया जाएगा, यह तय करने में अग्रणी भूमिका निभाई है – चाहे केंद्रीकृत डेटाबेस के माध्यम से या वितरित खाता प्रौद्योगिकी (डीएलटी) का उपयोग करके – अन्य बैंकों ने अभी तक यह तय नहीं किया है कि डिजिटल मुद्राओं के लिए मौजूदा बुनियादी ढांचे को कैसे अनुकूलित किया जाए। उन्हें इस बात पर भी विचार करने की आवश्यकता होगी कि कैसे ये बुनियादी ढांचे एक दूसरे के साथ मूल रूप से विलय कर सकते हैं। डिजिटल मुद्राओं में केंद्रीय बैंकों की रुचि क्रिप्टोकरेंसी और उनके दैनिक जीवन में अनुप्रयोगों के बारे में बढ़ती जन जागरूकता से उत्पन्न होती है। केंद्रीय बैंक के दृष्टिकोण से, डिजिटल मुद्रा के उपयोग का मतलब है कि सीमा पार से भुगतान तेजी से निपटाया जा सके और निपटान की लागत कम हो सके, संभावित रूप से कार्यप्रणाली क्षमता में काफी सुधार हो सके । वित्तीय सेवाओं, भुगतान दक्षता और लागत बचत तक पहुंच में वृद्धि के मामले में कई उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए वित्तीय समावेशन के निहितार्थ भी हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि डिजिटल मुद्रा जल्द ही एक वास्तविकता बन जाएगी। उनका समर्थन करने के लिए बुनियादी ढांचे कई मौजूदा डीएलटी संरचनाओं पर आधारित होंगे। निजी बाजारों की तरह, विश्वास, लागत और लेन–देन की गति के मुद्दे डिजिटल मुद्रा को अपनाने के लिए महत्वपूर्ण होंगे। ऐसा कोई कारण नहीं है कि डिजिटल मुद्रा और निजी तौर पर जारी क्रिप्टोकरेंसी सह–अस्तित्व में नहीं हो सकते हैं। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि निजी तौर पर जारी क्रिप्टोकरेंसी के मामले में, प्रतिपक्ष जोखिम अपेक्षाकृत उच्च स्तर का होता है। दोनों बाजारों के विकास के लिए आम जनता द्वारा निरंतर अपनाने की आवश्यकता है, नियामक समझ के साथ मिलकर मौद्रिक नीति को तदनुसार तैयार किया जाना चाहिए। कुछ साल पहले, डिजिटल मुद्राएं दूर के भविष्य की तरह लगती थीं, लेकिन अब यूरोपीय बैंकों और वित्तीय कंपनियों के लिए, यह भविष्य निकट है। हाल के वर्षों में, जैसा कि डिजिटल मुद्राएं अधिक लोकप्रिय हो गई हैं, कई प्लेटफॉर्म अब वित्तीय सेवा बाजार के साथ विनियमित, लाइसेंस–प्राप्त और पूरी तरह से अनुपालन कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में नई वित्तीय सेवाओं की उपभोक्ता मांग को पूरा करने के लिए बैंकों और फिनटेक को क्या करने की आवश्यकता है?

डिजिटलीकरण के लिए 2020 एक महत्वपूर्ण वर्ष था, क्योंकि दुनिया भर में लॉकडाउन का मतलब था कि कई लोगों का जीवन पूरी तरह से ऑनलाइन हो गया था। बैंक ऑफ इंटरनेशनल सेटलमेंट्स के एक हालिया भाषण में कहा गया है कि हमारी अर्थव्यवस्था एक तकनीकी क्रांति के बीच में है, जिसका अर्थ यह है कि बैंकिंग और फिनटेक क्षेत्रों के लिए बहुत सारे नए अवसर हैं। पहले से ही कई कंपनियां हैं जो सक्रिय रूप से डिजिटल मुद्राओं का उपयोग करती हैं, लेकिन अब उन्हें इन नए वित्तीय साधनों से निपटने के लिए उपयुक्त प्लेटफॉर्म की आवश्यकता है। जबकि बिटकॉइन सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी हो सकता है, स्थिर मुद्रा सहित कई अन्य लोकप्रिय विकल्प हैं, जो कि डिजिटल मुद्राएं हैं जो एक फिएट मनी या संपत्ति के लिए आंकी जाती हैं। वास्तव में, बैंकों को ब्लॉकचैन प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने या डिजिटल मुद्राओं के लाभ प्राप्त करने के लिए लाखों का निवेश करने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अधिकांश बैंकों और वित्तीय संस्थानों के पास पहले से ही आवश्यक प्रक्रियाएं हैं, उन्हें केवल अपग्रेड करने और एक नए बाजार में लाने की आवश्यकता है।

महामारी की त्रासदी के खिलाफ, हमने भौतिक अर्थव्यवस्था से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर तेजी से बढ़ते हुए देखा है। यह वित्तीय सेवाओं और भुगतान विधियों की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट नहीं है, नकदी के उपयोग में उल्लेखनीय गिरावट के साथ। नई तकनीकों, सार्वजनिक नीति और उद्यमशीलता के उत्साह के संयोग से वित्तीय बाजारों और वास्तविक अर्थव्यवस्थाओं को और अधिक डिजिटलीकृत किया जाएगा। मुद्राओं का एक जाल जल्द ही दुनिया को प्रावरित करेगा। ये दोनों सेमी–फियट (जैसे कि स्थिर मुद्रा) और निजी होंगे, जिनमें से कई बीच में जगह लेंगे । यह मुख्य रूप से डिजिटल रूप में होगा, हालांकि इसमें भौतिक प्रतिनिधित्व भी होगा, विशेष रूप से संप्रभु मुद्राओं का। क्रिप्टोकरेंसी समान गति से खिलती और नष्ट होती रहेगी। कुछ संस्थागत निवेश संपत्ति बन जाएंगे, हालांकि शायद व्यापक रूप से स्वीकृत भुगतान साधन नहीं हैं। उपयोग में गिरावट आने पर भी, निकट भविष्य के लिए भौतिक नकदी मौजूद रहेगी।

आलेख

नीलकंठ केदारनाथ - यात्रा वृतांत

हुकूमतें बदली, रियासतें बदली, पर बिल्कुल नहीं बदला मिज़ाज। ऐसा गुमनाम गुलिस्तान जिसे लोग जानते हैं शहर 'लक्सर' के नाम से। कहने को तो बहुत ही छोटी सी जगह, परन्तु लिहाज़ वहीं, मिज़ाज वहीं, हवा में आज भी वही तरोताजापन। सुर्ख लाल रंग की चादर ओढ़े अभी शहर आंख मलकर उठ खड़ा ही हो रहा था और चाय की चुस्कियों के साथ उस दिनकर से आंखें मिलाने को तैयार हो रहा था। तभी हमारी रेल गाडी अपने भोंपू की आवाज़ के साथ पहुंची छोटे से रेलवे जंक्शन पर,जो कि हमारी अद्भुत यात्रा का पहला पड़ाव यानी शहर 'लक्सर'। आंख मलते हुए जैसे ही जमीन पर पहले कदम पड़े, वैसे ही चाय-चाय की आवाज़ कान में गूंज पड़ी। चाय की चुस्कियों के साथ चर्चा भी गर्म हुई। अब यहाँ से आगे की दूरी यानी अपने अगले गंतव्य स्थान हरिद्वार की बाकी बची यात्रा कैसे तय की जाए? लक्सर से हरिद्वार की वो छोटी सी दूरी फिर से हम लोगों ने ट्रेन की बदौलत ही तय करने की ठानी। लक्सर से हरिद्वार की दूरी घंटों की थी, परन्तु यात्रा की ललक चंद घंटों की दूरी को कैसे चंद पलों में समेट दिया, मालूम ही नहीं चला। अब अगर आप सोच रहे हैं कि मैं कौन हूँ, तो मैं हूँ अमित विक्रम, इस कहानी, इस यात्रा वृत्तांत का सूत्रधार।

वह वक्त भी क्या वक्त था, न दुनियादारी की चिंता, न पैसों की खनक की गूंज की आहत इन सबसे अलग मस्त मलंग से फिरता रहा और जा पहुंचा हरिद्वार की उस देवभूमि में। हरिद्वार की धरती पर पहुंचते ही उस देवभूमि की हवा में वो एक भीनी-भीनी सी अद्भुत महक को महसूस करते हुए, ऐसा लगा जैसे आज ही आत्मा तृप्त हो गई और जीवन की एक नई शुरुआत की अनुभूति भी लग रही थी। परन्तु हूँ तो मैं भी एक मानव ही, रास्ते की थकान से नींद अपनी आगोश में लेने को बेताब थी। तो भूख की तलब भी जग रही थी।

दोनों के बीच सामंजस्य बैठाते-बैठाते कब रात की काली चादर ने पूरे शहर को अपनी आगोश में लेना शुरू कर दिया, पता ही नहीं चला। इसी तरह थके हारे कदम को लेते हुए चमचमाती, अपनी ओर आकर्षित करती हुई, रोशनी से नहाई एक अच्छे खासे रेस्तरां की ओर बढ़ चला पूरे लाव लश्कर के साथ। ऐसा लगा आज की रात भूख से बिलखाएगी, तो लुकमो से भी मिलवायेगी।

अमित विक्रम
प्रबंधक
वेस्ट आवनी मूला स्ट्रीट शाखा, मदुरै

उस रेस्तरां के मालिक ने मुस्कराते हुए बड़े अदब से हमारा इस्तकबाल किया और बड़े तहज़ीब से पूछा- खाने में क्या चलेगा साहब जी? हमने भी बड़े खुश मिजाज़ ढंग से अपने खाने की सारी ज़रूरतों को उनके कागज़ रूपी दस्तरखान पर उतार दिया। अब बारी थी उनकी। बार-बार अपने शरीर की अंगड़ाई को महसूस करते हुए बिस्तर की ओर जाने की ललक उठ रही थी पर पेट की आग के सामने, लगी खाली प्लेटों को हम टकटकी लगाए देख रहे थे।

खैर, इंतज़ार ने अपनी घड़ियों को समेटा और लजीज़ खाने हमारी ओर बढ़ चले और हमारे खाली प्लेटों की शोभा बढ़ाने को एक-एक कर हमारे प्लेटों पर उतरने लगे। हम भी छोटे बच्चे जैसे टकटकी लगाए, कभी चीनी मिट्टी के सुनहरे बर्तनों को देखते कभी उन परोसने वाले को। तब जाकर शुरू हुई उस रात का पहला निवाला। सुर्ख सुनहरे रंग में रंगी सब्जियों और तंदूर की लहकती आगों से निकलती रोटियां, मन को तृप्त कर देने वाली थी। जब यह कार्यक्रम संपूर्णता की तरह पहुंचा, तब याद आई अपने अगले गंतव्य स्थान की, यानी बिस्तर की। बिस्तर पर जाकर इसी उधेड़बुन में रहा कि कल हमारी यात्रा की अगली शुरुआत कब और कैसे होगी? क्योंकि अगला पड़ाव जो था वो एक अद्भुत, अनोखा, अद्वितीय यानी भगवान महादेव का ग्यारहवां ज्योतिर्लिंग बाबा केदारनाथ। उस उधेड़बुन में पूरी रात कटी और नींद ने हमको अपनी आगोश में कब ले लिया, यह मालूम भी नहीं चला।

अगली सुबह, जब सूर्य की किरणें हमारी आंखों पर पड़ी तो चाय की चुस्कियों के साथ फिर चर्चा गर्म हुई, लेकिन इस चर्चा को विराम दिया उस विश्रामालय के प्रबंध समिति के सदस्य ने। इनके द्वारा ही हमें यहाँ रखने का सारा इंतज़ाम किया गया था। उन्होंने आगे के लिए उसी तत्परता के साथ सारी यात्रा का इंतज़ाम हमारे लिए किया। उस विश्रामालय से सारे लाव लश्कर के साथ बड़े सभ्य और सलीके से हम 'हर हर महादेव' का उद्घोष करते हुए निकल पड़े, अपने अनूठे, अनोखे सफर पर। हरिद्वार से निकलते हुए माँ गंगा ने अपनी कल–कल धाराओं ने ऐसा सुर ताल हमारे कानों में छेड़ा कि आज भी वो ध्वनि हमारे कानों में गूंजती रहती है।

हमारा कारवाँ पहुंचा ऋषिकेश और ऋषिकेश से हम पहुंचे देवप्रयाग, जहाँ माँ मंदाकिनी की कलकल धाराएं अपने अद्भुत स्वरूप का दर्शन दे रही थी, और धीरे–धीरे शाम ढल रही थी। एक तरफ विशालकाय पर्वत श्रृंखला, तो दूसरी तरफ मंदाकिनी की कल–कल धाराएं। इन दोनों के बीच सक्रिय, परन्तु सँकरे रास्ते पर हम हमारे चार पहिये के साथ पहुंचे श्रीनगर, एक ऐसा प्रदेश जहाँ पर सारे राहगीर विश्राम करतें और फिर हमारे चालक महोदय ने शालीनता के साथ हमें यह बताया कि यह जगह रात्रि विश्राम के लिए उपयुक्त है। हमने भी चारों तरफ़ अपनी नज़र दौड़ाई, बहुत सारे यात्रियों के वाहन चालक होटलों में अपने राहगीरों को छोड़कर विश्राम कर रहे थे। हमने भी वही जगह उपयुक्त समझी।

रात अपनी आगोश में श्रीनगर शहर को अपने अंदर समेटने को तैयार बैठी थी। आकाश में टिमटिमाते तारे, ठंड की भीनी–भीनी आहट बिस्तर की ओर जाने को इशारा कर रही थी। आखिरकार रात की पेट पूजा करके जब हम बिस्तर के आगोश में गए तो सारे सपने कैसे नींद में तब्दील हो गए ये मालूम ही नहीं चला।

सुबह चाय की धीमी–धीमी धमक जब हमारे सामने पड़ी तो आँखों के सामने का पर्दा हटा और पहली घूंट बनकर यह हमारी हलक के नीचे उतरी, परंतु मन में एक ही सवाल कौंध रहा था कि कब होंगे गंगाधर, उस नीलकंठ के दर्शन। ठंड फिर से धीरे–धीरे बढ़ने शुरू हो गई थी, हमें अपना सफर आगे शुरू करना था और हमने श्रीनगर से आगे का सफर शुरू किया । मैं बार–बार अपनी दोनों हथेलियों को रगड़कर अपने को गर्म रखने की नाकामयाब कोशिश कर रहा था न जाने कब गुप्तकाशी सोनप्रयाग को पार करते हम गौरीकुंड पहुंचे, प्रकृति की अद्भुत छटा देखकर मन प्रसन्नचित्त हो रहा था।

प्रकृति का ऐसा अनूठा स्वरूप न कभी देखा न कभी सुना, बर्फीली ठंडी हवाएं उजली चादर सी कल–कल करती और उफान मारती नदिया और उसके बीच न जाने कहाँ एक ऐसा अद्भुत दृश्य देखने को मिला जिसकी कल्पना भी कर पाना बड़ा ही मुश्किल था। गौरीकुंड के उस ठंडे मौसम में बर्फ सी कपकपाती ठंडी में न जाने कहाँ से एक गर्म पानी का कुंड दिखाई पड़ा जिसका जल कहा से अवतरित होता है और कहा जाता है, ये आज भी जान पाना किसी के लिए बड़ा ही मुश्किल कार्य है। प्रकृति की अद्भुत छटा को देखकर मन प्रसन्नचित्त हो रहा था और कई सवाल मन के अंदर उठ खड़े हो रहे थे, प्रकृति का ऐसा अनूठा स्वरूप न कभी देखा न कभी महसूस किया, अपनी आँखों पर कभी– कभी विश्वास नहीं हो रहा था कि क्या प्रकृति का ऐसा स्वरूप भी हमें कभी देखने को मिल सकता है।

गौरीकुंड के एक छोटे से कमरे में अपने धड़ को समेट जैसे–तैसे कंबल के अंदर अपने शरीर को ढकने की बेताबी और उस गर्म–गर्म काढे के साथ उस प्रकृति के अनोखे स्वरूप अपने मन के अंदर कैद कर रहा था। अब आगे की यात्रा की तैयारी के लिए हमने वहाँ के कुछ स्थानीय लोगों से जानकारी प्राप्त की। स्थानीय लोगों के द्वारा यह जानकारी प्राप्त हुई कि आगे अभी 14 किलोमीटर की लंबी चढ़ाई पैदल ही तय करनी है। ऐसा सुनते ही ऐसा लगा जैसे पैरों–तले जमीन ही खिसक गई। इस ठंड भरे मौसम में यह सोचने लगा, इतनी दूर तो आ गया पर अब आगे कैसे? ठंड अपनी चरम सीमा को पार कर रही थी, शरीर का कोई हिस्सा ऐसा बाकी न था जहाँ ठंड का अहसास न हो रहा हो, लेकिन एक अद्भुत शक्ति हमारे साथ थी। जैसे ही 'हर हर महादेव' की गूंज कानों में पड़ी, ऐसा लगा न जाने कहाँ से एक अद्भुत शक्ति का संचार पूरे शरीर में हो गया और हम निकल चले उस अद्भुत, अनोखी, अद्वितीय यात्रा पर जिसका वर्णन आज तक सिर्फ अपने बुज़ुर्गों से ही सुना था।

प्रकृति की गोद में बलखाते लहराते हुए हम छोटी–छोटी लाठियां लेकर बढ़ चले उन सकरे पथरीले रास्तों पर। 'हर हर महादेव', 'जय जय महादेव' के जयघोष के साथ हम धीरे–धीरे आगे बढ़ना शुरू किया। चारों तरफ फैली हरियाली तरह–तरह के वृक्ष अनूठे फूलों की खुशबू बार–बार अपनी ओर आकर्षित करती। ऐसा लगता जैसे यह प्रकृति हमें अपनी ओर बुला रही है। एक तरफ चांदी जैसे सफेद बर्फ़ की चादर से लिपटी हुई विशालकाय पर्वत श्रृंखला, तो दूसरी तरफ कल–कल करती नदिया हमारे अंदर एक स्फूर्ति जगा रही थी। अपने छोटे–छोटे पांव से उन सकरे रास्तों पर चलते–चलते कभी बगल से घोड़े के गुज़रने की आवाज़ रोमांचित कर उठती थी। घोड़ों के टॉप की खटपट–खटपट की आवाज़ अपनी ओर आकर्षित करने को मजबूर करती थी, कि कैसे वो इस सकरे से पथरीले रास्तों पर चले जा रहे थे।

ठंड भरे इस मौसम में छोटे–छोटे लकड़ियों के बने घर जिनके छज्जे प्लास्टिक से सुसज्जित थे और उनके अंदर बने छोटे–छोटे रेस्तरां होटल उनकी तो बात ही मत पूछो। उनके अंदर पकने वाले पकौड़े और चाय की भीनी सौंधी खुशबू जब आपके अंदर प्रवेश करती थी तो उसकी तलब अपनी ओर खींचती थी। खैर, हम भी तो ठहरे दो पाव वाले जीव ही। रास्ते भर इन्हीं चाय पकौड़े के सहारे उस ठंड को मात देने की कोशिश कर रहे थे।

हम आगे बढ़ें, 'हर हर महादेव' के उद्घोष के साथ, उनके अलौकिक दर्शन को हम बेताब हुए जा रहे थे। रास्ते में छोटे–छोटे परंतु बर्फ़ की शीतलता लिए झरनों से गिरते पानी की छींटे अपने ऊपर डालते हुए आगे की ओर बढ़ते जा रहे रास्ते में कभी–कभी आराम फरमाने और सहयात्रियों के साथ वार्तालाप करने का भी एक अनोखा अनुभव प्राप्त हो रहा था। दूरी कम होती चली गई, परंतु ठंड अपनी चरम सीमा की ओर बढ़ ही रही थी और हम भी अपने गंतव्य की ओर अग्रसर हो रहे थे। बर्फ़ से ढके पहाड़ों की श्रृंखलाओं के बीच भगवान भोलेनाथ के अद्भुत अनोखे स्वरूप के दर्शन के लिए उसी जोशो–खरोश के साथ हम चलते चले जा रहे थे। जब–जब रास्ते में छोटे–छोटे झरने से हमारा संपर्क होता तो शरीर में बिजली सी दौड़ पड़ती थी, परंतु ऐसा भी लगता था कि एक नई स्फूर्ति का उद्भव हुआ, ऐसा अनोखा अनुभव जीवन में कभी नहीं मिला। ऐसा लगा जैसे सारी थकान कहीं गुम हो जाती झरनों की कल–कल धाराओं के बीच और पूरे शरीर में ऊर्जा का संचार अपने चरम पर पहुँच जाता और फिर से अपने गंतव्य स्थान यानी भगवान भोलेनाथ की इस पावन भूमि की तरफ हम बढ़ने लगते। 'जय केदारनाथ' के नाम का उद्घोष चारों तरफ फैला पड़ा था। 'ओम नमः शिवाय' और 'जय महादेव' के उद्घोष के साथ हम उस देव भूमि को नमन करते हुए आगे बढ़ते रहे।

उस नीलकंठ को हम न जाने कितने नामों से जानते हैं, परंतु ऐसा अलौकिक स्वरूप जो न कभी देखा और न कभी सुना, उस स्वरूप की बार–बार मन में एक कल्पना करते हुए हम आगे बढ़ते चले जा रहे थे। मन में बार–बार ये विचार आ रहा था कि इन दृश्यों को अपने अंदर समेट लूं और यह प्रकृति की छटा हमारे मन मस्तिष्क से कभी विलुप्त न हो। आखिरकार हम पहुँच ही गए उस नीलकंठ के दरवाजे पर दस्तक देने जिसके दर्शन की अभिलाषा लिए हमने यात्रा प्रारंभ की थी। सर्वप्रथम मन को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि आखिर यहाँ तक हम पहुंचे कैसे? मन को सहेजा और भगवान के लिए मंदिर के निकट ही छोटे–छोटे फूलों की दुकान से एक–एक पुष्प चुनकर अपने भगवान भोलेनाथ के लिए एकत्रित करना शुरू किया। जल का तर्पण कर के चल दिया दर्शन करने नीलकंठ महादेव का। उस न भूलने वाले क्षण को अपनी आँखों में कैद करते हुए दर्शन की अभिलाषा लिए मंदिर के अंदर प्रवेश किया और आखिरकार दर्शन हुए महादेव के अलौकिक स्वरूप का जिसकी कल्पना भी कर पाना बड़ा मुश्किल था। शरीर से ठंड मानो गायब ही हो गई मन में सिर्फ एक ही भाव था। 'ओम नमः शिवाय', 'ओम नमः शिवाय'। मंदिर की परिक्रमा करते हुए भगवान के जयघोष के साथ हमने अपनी इस यात्रा को सम्पन्न किया। उस अलौकिक शक्ति को अपने अंदर समेटे वापस फिर हम लौट पड़े गौरीकुंड की ओर। पर्यावरण की छटा, मंत्रमुग्ध कर देने वाले भगवान शिव के अनोखे स्वरूप अपने मस्तिष्क में कैद करते हुए और अपने हृदय से लगाए हुए वापस गौरीकुंड से हरिद्वार की ओर बढ़ चले और फिर हरिद्वार से अपने निवास स्थान की ओर अग्रसर हुए, पर दिल में यही उम्मीद थी फिर से दर्शन करने लौटूंगा। ये थी हमारी यात्रा, ईश्वर से यही मंगल कामना करता हूँ कि अपने इस अनोखे अलौकिक स्वरूप का दर्शन हर एक मानव को एक बार करने का ज़रूर मौका दें।

हिंदी में बैंकिंग पारिभाषिक शब्द : स्वरूप, संरचना, वर्गीकरण एवं विशेषताएँ

आलेख

पारिभाषिक शब्द वे शब्द हैं जो सामान्य व्यवहार में आने वाली भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किए जाने वाले शब्द हैं तथा संबंधित विशिष्ट ज्ञान, विज्ञान या शास्त्र में उनकी अर्थ–सीमा परिभाषित या निश्चित रहती है। जिस शास्त्र में इनका प्रयोग किया जाता है, वहाँ उनका विशिष्ट और निश्चित अर्थ होता है, इसलिए जहाँ उनका प्रयोग होता है वहां उनकी सहायता से निश्चित, स्पष्ट और अपेक्षित अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। दैनंदिन जीवन में प्रयोग किए जाने वाले सामान्य शब्द अभिधार्थ होते हैं जबकि पारिभाषिक शब्दों में अर्थ की सूक्ष्मता अधिक होती है तथा अधिकांश मामलों में उनका अर्थ जानने के लिए परिभाषा की समझ अपेक्षित होती है। मोटे तौर पर, पारिभाषिक शब्दों को वस्तु–बोधक और संकल्पनाबोधक नामक दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। वस्तुबोधक पारिभाषिक शब्द के अंतर्गत वे शब्द आते हैं जो किसी वस्तु–विशेष को अभिव्यक्त करते हैं, जैसे – चेक, काउंटर, बैंक, कम्प्यूटर, रजिस्टर आदि। संकल्पनाबोधक वे शब्द होते हैं जिनमें संकल्पनाएं छिपी होती हैं, जैसे– दृष्टिबंधक, परक्राम्य, म्युचुअल फ़ंड, प्रतिभूति आदि। भाषाविदों का मानना है कि संकल्पना बोधक शब्द हमेशा उर्वर होने चाहिए और उन्हें अपनी भाषा से ही लिया जाना चाहिए क्योंकि ज्ञान के उस संबंधित क्षेत्र में जिस तरह के अर्थ की ज़रूरत होती है, उसके अनुसार मूल शब्द के रूप को व्याकरणिक प्रक्रियाओं के द्वारा परिवर्तित करते हुए नये–नये अर्थवान शब्द निर्मित कर लिए जाते हैं तथा वे संबंधित विषय के प्रयोक्ता के लिए हस्तामलक होते हैं। अंग्रेज़ी भाषा, पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करने के लिए अधिकांश मामलों में लैटिन और ग्रीक भाषा के शब्दों और उनकी व्याकरणिक संरचनाओं की मदद लेती है। उदाहरण के लिए संकल्पनाबोधक शब्द Therm इसका बहुत ही बढ़िया उदाहरण है, जिससे अंग्रेज़ी भाषा 50 नये–नये व्युत्पन्न (शब्द) बनाती है, जैसे–Thermal belt, Thermal capacity, Thermion, Thermometa-morphism इत्यादि और उनका उपयोग भौतिकी तथा इंजीनियरिंग आदि की विभिन्न शाखाओं में कई संकल्पनाओं की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है तथा हर व्युत्पन्न शब्द का अर्थ संदर्भानुसार अलग–अलग होता है।

डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय
सहायक महा प्रबंधक
(सेवा निवृत्त)

आज बैंकिंग में प्रयुक्त होने वाले हिंदी पारिभाषिक शब्द कई स्रोतों से आए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:

मौलिक अंग्रेज़ी शब्द:

इसके अंतर्गत बैंकिंग के वे शब्द आते हैं जो मूलत: अंग्रेज़ी के हैं और उन्हें देवनागरी में लिप्यंतरित करके हुबहू प्रयोग में लाया जा रहा है, जैसे– बैंक, चेक, बोनस, कमीशन, डिबेंचर, प्रीमियम, क्रेडिट कार्ड आदि।

2. संकर शब्द :

इस प्रकार के शब्दों में प्रारंभ या अंत का कोई एक शब्द अंग्रेज़ी का और दूसरा हिन्दी का होता है, जैसे – माँग ड्राफ़्ट, बचत बैंक, इंडेन्टकर्ता, गारंटीकृत, पेंशनभोगी आदि।

3. अंग्रेज़ी शब्दों का ध्वनि अनुकूलन :

बैंकिंग में हिंदी में प्रयुक्त होने वाले कुछ ऐसे भी पारिभाषिक शब्द हैं जो मूलत: अंग्रेज़ी के हैं पर निरंतर हिंदी भाषी क्षेत्रों में प्रयोग में लाए जाने के कारण उनका उच्चारण हिंदी की उच्चरित ध्वनि की प्रकृति के अनुकूल हो गया है, जैसे– कूट, रसीद, तिजोरी, अंतरिम आदि। ध्वनि अनुकूलन की यह प्रवृत्ति दुनिया की अन्य भाषाओं में भी देखने को मिलती है, जैसे– Bromide को अंग्रेज़ी में Bromide, जर्मन में Bromid, रूसी में Bromed, जापानी में Burromaids, अरबी में Bromeed आदि कहते हैं।

4. भारतीय कारोबार में प्रचलित पुराने पारिभाषिक शब्द :

भारत की पुरानी महाजनी बैंकिंग में प्रयुक्त पारिभाषिक हिंदी शब्द भी आज की बैंकिंग में प्रचलन में आ गए हैं जैसे– आँकड़ें, लेनदेन, हुंडी, दलाल, रोकड़, कुर्की, आढ़तिया, रियायत आदि।

5. अंग्रेज़ी के मुहावरेदार पारिभाषिक शब्दों का हिंदी रूप :

ये वे शब्द हैं जिनका बैंकिंग में प्रयोग होने पर वे सामान्य अर्थ से नितांत भिन्न अर्थ देते हैं। उदाहरण के लिए, Bridging loan पुल ऋण न होकर पूरक ऋण है, Bull market साँड़ बाज़ार न होकर तेजडिया बाज़ार है, इसी तरह से असंख्य शब्द हैं, जिनका हिंदी पर्याय बनाते समय तथा प्रयोग करते समय अत्यंत सावधानी एवं सूझ–बूझ की ज़रूरत पड़ती है। कई ऐसे भी संकल्पनाबोधक मुहावरें हैं जिनका हिंदी रूप न लिखकर उनका प्रचलित रूप ही लिखना अधिक श्रेयस्कर होगा, जैसे–हेयर कट (Hair cut), हॉकिश नीति (Hawkish policy), बैंक एजेंट मॉडल (Bank agent model) इत्यादि। भारतीय रिज़र्व बैंक ने इस तरह के कुछ महत्वपूर्ण शब्दों का संचयन करके उनकी व्याख्या सहित बैंकिंग पारिभाषिक कोश नामक पुस्तक प्रकाशित की है जो काफी ज्ञानवर्धक एवं बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी में काम करने वालों के लिए अत्यंत उपयोगी है।

6. अन्य विदेशी भाषाओं के शब्द :

बैंकिंग में कई ऐसे पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग होता है जिनका उत्स अंग्रेज़ी से भिन्न भाषाएँ हैं, जैसे–Modus operandi, At par, Lumpsum आदि, इन्हें हिंदी में अनुवादित करके क्रमश : कार्य प्रणाली, सममूल्य, एकमुश्त के रूप में प्रयोग किया जाता है।

7. आम बोल–चाल के शब्द :

कुछ शब्द पारिभाषिक होने पर भी परंपरागत रूप में आम–जनों के बीच काफी प्रचलित हो गए हैं, जैसे–मालभाड़ा, निपटान आदि।

आज ज़रूरत इस बात की है कि इन सभी स्रोतों से आने वाले पारिभाषिक हिंदी शब्दों का रोज़मर्रा की बैंकिंग में अधिक से अधिक इस्तेमाल किया जाए।

पारिभाषिक बैंकिंग हिंदी शब्दावली का निर्माण / संरचना :

पारिभाषिक बैंकिंग हिंदी शब्दावली के निर्माण के मामले में वस्तुबोधक शब्दों को ज्यों का त्यों उन्हें रोमन से देवनागरी में लिप्यंतरित करके हिंदी में प्रयोग करने की सलाह भाषाविदों/ अनुभवी बैंकरों द्वारा दी जाती है, जैसे–अंगरेज़ी के Bank के लिए हिंदी में बैंक लिखना ही सही होगा, इसके लिए अलग से शब्द बनाने की ज़रूरत नहीं है और इसका अनुवाद करने की भी आवश्यकता नहीं है। रोमन लिपि के शब्दों को देवनागरी लिपि में लिप्यंतरित करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. अंग्रेज़ी भाषा और हिंदी भाषा के जानकार लोगों द्वारा शब्दों का जो मानक उच्चारण प्रचलन में हो, उसे ही लिप्यंतरित किया जाना चाहिए। ऊपर दिए गए उदाहरण यानी बैंक शब्द को ही लें, कई लोग इसे बेंक, ब्यांक के रूप में भी उच्चरित करते हैं, परंतु शिष्ट उच्चारण बैंक होने के कारण देवनागरी हिंदी में यही रूप ग्राह्य है। साथ ही , लिप्यंतरित करते समय दोनों लिपियों के गुण–धर्मों पर भी दृष्टि रखनी चाहिए। हिंदी में लिखते समय उच्चारण पर अन्य भाषाओं के उच्चारण जनित प्रभाव से भी हिंदी पारिभाषिक शब्दों को बचाने की ज़रूरत है। उदाहरण के लिए, voucher को हिंदी में भाउचर लिखने के बजाय वाउचर लिखना अधिक शिष्ट और सही प्रयोग है, ऐसे ही, अन्य शब्दों के लिप्यंतरण के मामले में भी सावधानी बरतनी चाहिए।

2. देवनागरी में लिप्यंतरित करते समय भारत सरकार द्वारा निर्देशित मानक हिंदी वर्तनी का ही हर जगह प्रयोग करना चाहिए, इससे एकतरफ़ जहाँ एकरूपता आएगी, वहीं, दूसरी तरफ, वर्तनी की अशुद्धियाँ भी नहीं होंगी और अर्थ भ्रम की गुंजाइश भी नहीं रहेगी।

संकल्पनाबोधक शब्दों को पारिभाषिक शब्दावली का प्राण कहा जाता है। यही वे शब्द हैं, जो ज्ञान के गंभीर कोश को अपने अंदर संचित करके रखते हैं। अत: इन शब्दों का चयन करते समय पर्याप्त सावधानी बरतना आवश्यक है। भाषाविदों का मानना है कि संसार में संस्कृत, अरबी, चीनी , लैटिन और ग्रीक जैसी पाँच भाषाएँ ऐसी हैं जिनमें उर्वरक शब्दों से कई नये–नये शब्दों को बनाने की अकूत एवं अद्भुत क्षमता है। इनमें भी, भाषाविदों की राय में संस्कृत भाषा धातु, प्रत्यय, उपसर्ग, संधि तथा समास–शक्ति के कारण बड़ी उर्वरा है और इन व्याकरणिक तत्वों का उपयोग करके नये–नये शब्दों को रचने के अद्भुत सामर्थ्य है। भारत सरकार का भी यह निदेश है कि हिंदी भाषा में नये–नये शब्दों के गढ़ने के मामले में संस्कृत भाषा से मदद ली जाए। उपसर्गों, प्रत्ययों, समासों, संधियों की मदद से कई नये शब्द बनाए जा सकते हैं।

उपसर्ग:

संस्कृत के 22 (अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत्,–उद्, उप, दुर्–दुस्, नि, निर्–निस्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम, सु), हिंदी के 13(अ–अन, अंध, उन, औ–अव, दु, नि, बिन, भर, कु–क, सु–स) और हिंदी में प्रचलित उर्दू उपसर्ग(अरबी, फारसी) के 19 (अल, कम, ख़ुश, ग़ैर, दर, ना, फ़िल–फ़ी, ब, बद, बर, बाँ, बिल, बिला, बे, ला, सर, हम, हर) उपसर्गों के माध्यम से असंख्य शब्द निर्मित किए जा सकते हैं, जैसे – ध्यक्ष, अवज्ञा, आगमन, निषेध, सम्मेलन, गैर–हाजिर, अनुदान, उपदान, उपचित आदि। यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि संस्कृत उपसर्गों का प्रयोग तत्सम शब्दों के साथ, हिन्दी उपसर्गों का प्रयोग तद्भव शब्दों के साथ और उर्दू उपसर्गों का प्रयोग सामान्यत: उर्दू शब्दों के साथ ही होना चाहिए।

प्रत्यय:

संस्कृत के तद्धित और कृदंत दोनों प्रत्ययों की मदद से नये–नये शब्द बनाए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, हिंदी और उर्दू (अरबी, फ़ारसी) के प्रत्ययों की मदद से भी नये–नये शब्द बनाए जा सकते हैं। जैसे– निकास, बैठक, कसौटी, शिष्टता, राष्ट्रीय, बपौती, आढ़तिया,अग्रिम, मानवीय, अनिश्चय, बाशिन्दा इत्यादि।

मास:

नये–नये शब्दों के निर्माण में समासों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। तत्पुरुष, कर्मधारय, अव्ययीभाव, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, द्विगु आदि सभी समासों का उपयोग नये–नये पारिभाषिक शब्दों के निर्माण में किया जा सकता है। समास में दो पदों का योग होता है, अत: दो पदों वाले शब्दों के निर्माण में ये मददगार होंगे, जैसे– मतदान बूथ, मालगोदाम, पदच्युत, अनावश्यक, शतांश, यथासंभव, व्यर्थ, ऋणमुक्त, प्राचार्य, लेन–देन, व्यय–आधिक्य आदि।

संधि :

नये–नये शब्दों के निर्माण में संधियाँ भी बड़ी सहायक होती हैं। संस्कृत की तीनों संधियों (स्वर, व्यंजन और विसर्ग) और उनके तमाम प्रभेदों की मदद नये–नये पारिभाषिक शब्दों की संरचना के लिए ली जा सकती है। जैसे – निर्यात +उन्मुख=निर्यातोन्मुख (Export-oriented), परिच्छेद, प्रोत्साहन, दीर्घावधि अल्पांश, दुर्विनियोजन (misappropriation) आदि।

पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ :

पारिभाषिक शब्दावली में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

1. अर्थ सुनिश्चित होता है, अर्थात् अर्थ के लिए जिस शब्द का प्रयोग हुआ है, वह वही अर्थ देगा। उदाहरण के लिए, amount रक़म का ही बोध कराएगा, annuity bond से वार्षिकी बॉण्ड का ही अर्थ बोध होगा।

2. अर्थ में अस्पष्टता, दुर्बोधता एवं संदिग्धता नहीं होती अर्थात् जिस ज्ञान की शाखा का पारिभाषिक शब्द होता है, उस ज्ञान की शाखा में वह वही अर्थ देता है, उदाहरण के लिए – दशमलव शब्द को ही लें, इसका प्रयोग सदा– सर्वदा गणित के संदर्भ में ही किया जाता है।

3. छोटा एवं सरल हो, अर्थात् गागर में सागर की तरह होना चाहिए। यह शब्द ऐसा होता है, जो बड़ी से बड़ी संकल्पना को भी कम शब्दों में समेट लेता है। उदाहरण के लिए, प्रलेखी साखपत्र (Documentary letter of credit)

को ही लें, इस विषय पर घंटों चर्चा–परिचर्चा करने की गुंजाइश है, परंतु इस छोटे–से शब्द ने व्यापक विषय को अपने सूक्ष्म कलेवर में समेट रखा है। इसी तरह से, मंदी, (recession), आस्ति(assets), समूहन (syndica tion), अदला–बदली swap) इत्यादि को देखा जा सकता है।

4. उच्चारण सरल हो, जैसे–Factoring को आढ़त, Bottom fishing जैसे शब्द को अवसर देखकर लाभ उठाना या निम्नतम स्तर पर खरीदारी Government enterprise को सरकारी उद्यम कहना एक सरल अभिव्यक्ति है।

5. शब्द में उर्वरता हो, अर्थात् पारिभाषिक शब्द ऐसा होता है कि इसके स्वरूप को जैसे–जैसे बदलेंगे, वैसे–वैसे अर्थवान नये–नये शब्द निर्मित होते जाएंगे। उदाहरण के लिए, पंजी (Register) शब्द लें तो उससे पंजीयित या पंजीकृत (registered), पंजीकार (registrar), पंजीयक (registrator), पंजीयनार्थी (registrant), पंजीयन (registration) आदि आसानी से बना सकते हैं। इसी तरह, Law के लिए विधि जैसे उर्वरक पारिभाषिक शब्द से विधान करना (legislate), विधायी (legislative), विधायक(legislator), विधायकीय (legislatorial), विधान मंडल (legislature), विधेय (legislatable) जैसे शब्द, Consult से परामर्श लेना, consultant से परामर्शदाता, consultation से परामर्श, consultative से परामर्शक, consulting से परामर्शी, consultancy से परामर्शदात्री आदि जैसे शब्द निर्मित किए जा सकते हैं।

6. स्रोत भाषा में एक शब्द हो तो लक्ष्य भाषा में भी एक ही शब्द होना चाहिए। जैसे – Executive के लिए कार्यपालक, Elected के लिए निर्वाचित आदि।

7. प्रत्येक पारिभाषिक शब्द में अर्थ की दृष्टि से अंतर होना चाहिए। अर्थ में यदि थोड़ा– सा भी अंतर अपेक्षित होता है तो उसके लिए अलग–अलग पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए–order–आदेश, direction – निदेश, instruction – अनुदेश, sanction – स्वीकृति, approval – अनुमोदन, permission – अनुमति, इत्यादि।

इस तरह, हम देखते हैं कि बैंकिंग हिंदी पारिभाषिक शब्दों का क्षेत्र काफ़ी सुविस्तृत एवं अपार संभावनाओं से भरा हुआ है, बस ज़रूरत है तनिक अभ्यास की, झिझक को दूर करने की और अपनी भाषा के प्रति लगाव की। बैंकिंग हिंदी पारिभाषिक शब्दों का अधिक से अधिक प्रयोग करने से राजभाषा हिंदी का प्रयोग तो बढ़ेगा ही, साथ ही साथ दूर–दराज़ के क्षेत्रों में बैंकिंग की पैठ बनाने और जनता से सीधे जुड़ते हुए कारोबार को बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

खुद पर अटूट विश्वास!

किसी सेमिनार के दौरान वक्ता ने लोगों को ₹20 का नोट दर्शाते हुए पूछा– 'इसे कौन लेना चाहेगा'? नोट पाने की इच्छा से सभी ने अपना–अपना हाथ ऊपर उठाया। वक्ता ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि भीड में से केवल एक ही व्यक्ति इस नोट को पाने का हकदार बनेगा। उसने कागज़ के बने उस नोट को मसलते हुए भीड़ को फिर से दिखाया और अपने सवाल को दोहराया। अब भी उस भीड़ में से हर व्यक्ति उस नोट को पाना चाहता था। फिर उसने नोट को जमीन पर फेंकते हुए उसे पैरों से मसला और उसे फिर से उठाया और जनता के सामने पेश किया। अब नोट काफी गंदा हो चुका था, इसके बावजूद वहां मौज़ूद लोगों ने उस नोट को पाने में दिलचस्पी दिखाई। उस वक्ता ने वहां मौजूद लोगों से कहा– 'मैंने इस पैसे के साथ क्या कुछ नहीं किया, फिर भी आप सभी लोग इसे पाने की इच्छा रखते हैं। आप सभी इसे इसलिए पाना चाहते हैं, क्योंकि पैसे के साथ इतना सब कुछ कर लिए जाने के बावजूद भी पैसे का मूल्य कभी कम नहीं हुआ, उसका मूल्य ज्यों का त्यों बना रहा। इसी तरह मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों या असफलताओं के बावजूद खुद पर से विश्वास नहीं उठने देना चाहिए और सफलता पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। असफलता अस्थायी स्वरूप की होती है जबकि कभी हार न मानने की प्रवृत्ति के साथ अथक परिश्रम से सफलता अवश्य हासिल की जा सकती है। अत: स्वयं पर विश्वास कायम करने में ही सफलता का राज़ निहित है'।

कविता

नन्हें कदम आज बड़े हो गए

सीमा भाटी
एकल खिड़की परिचालक
चोपासनी रोड शाखा, जोधपुर

नन्हें कदमों से बड़े हो गए
देखो आज हम आगे बढ़ गए... !

वो बचपन ही सुनहरा था बिछडने का न डर था
उस ज़िद का भी नाम था जिस पर मां–बाप का दिल पिघलता था।

हर तनाव से मुक्त थे सबके दिल में बसते थे
खेल खिलौने से जीते थे बस शरारत ही शरारत करते थे।

आज रुख बदल गया देखो सब कुछ उलट गया
न रहे हो नन्हें अब उम्र का दायरा पलट गया।

गुम थे हम अपनी शरारतों में उन पर है ताला लग गया
वो दोस्ती भी क्या खूब थी कभी न टूटने वाली थी।

न हंसने का पता था न रोने का ग़म था
हर लम्हा जीते थे आंखों का बस यही सपना था।

छूट चुका वो लम्हा अब नन्हें कदम जो बड़े हो गए
छोड़ उन वादियों को देखो आज हम आगे बढ़ गए ...!

आलेख

संगठन के विकास में टीम कार्य का महत्व

ओमप्रकाश एन एस
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु

टीम की परिभाषा :

किसी भी संगठन के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए टीम वर्क की अहमियत को समझना बेहद ज़रूरी है। एक टीम का निर्माण लोगों के समूह से होता है। समूह(टीम), किसी भी संगठन के मूल निर्माण खण्ड होते हैं। अत:, परिवर्तन की बुनियादी इकाइयां समूह हैं, व्यक्ति नहीं। यद्यपि, कई समूहों को टीम कहा जाता है, किंतु हर कार्य समूह टीम नहीं होता। एक कार्य समूह में, कार्यनिष्पादन वह कार्य है जिसे इसके सदस्य अलग-अलग व्यक्ति के रूप में करते हैं। एक कार्य समूह में व्यक्तिगत लक्ष्यों और उत्तरदायित्वों पर ध्यान केन्दित रहता है। एक टीम का निष्पादन प्राय: टीम द्वारा सामूहिक रूप से प्रदान की गयी सेवाओं / उत्पादों की गुणवत्ता द्वारा मापा जाता है। टीम कार्य, किसी भी कार्य को सबसे प्रभावी और अधिक कुशल तरीके से पूरा करने या किसी सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में एक समूह का संयुक्त प्रयास होता है। कार्यस्थल पर कर्मचारी एक टीम के रूप में एक साथ काम करके बेहद लाभान्वित होते हैं, क्योंकि टीम वर्क दक्षता बढ़ाने, कार्यभार वितरित करने, आपसी तालमेल बनाए रखने और एक ऐसी संस्कृति बनाने में मदद करता है जहां प्रत्येक कर्मचारी अपनेपन की भावना के साथ सशक्त महसूस करता है।

जब लोगों का एक समूह कोई कार्य करता है तो उसे टीम वर्क कहा जाता है। अत: किसी भी संस्था के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए टीम वर्क अत्यधिक महत्वपूर्ण है। संकटपूर्ण स्थितियों में टीम भावना से किया गया कार्य सफलता को सुनिश्चित करता है। टीम, स्पष्ट रूप से परिभाषित उद्देश्यों, मिशन और लक्ष्यों सहित कुछ विशेषताओं को साझा करती हैं। संगठन में अकेला इंसान सिर्फ एक बूंद के समान होता है जबकि पूरी टीम समुंदर के समान होता है। अमरीकी उद्यमी एंड्रयू कार्नेगी के अनुसार – 'किसी विशिष्ट उद्धेश्य हासिल करने के लिए एक साथ किया जाने वाला कार्य ही टीम वर्क है'। यह व्यक्तियों को संगठनात्मक लक्ष्य हासिल करने के लिए प्रेरित करने का नाम भी है। ऐसे समय में जब संस्थाएं वैश्विक स्वरूप धारण कर रही हैं, विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए टीम भावना से काम करना पहले से अधिक ज़रूरी हो गया है। यह वह ऊर्जा है, जो सामान्य व्यक्ति को विशिष्ट लक्ष्य हासिल करने की दिशा में काबिल बनाती है।

टीम सदस्य :

टीम के सदस्य दूसरों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और सौंपें गए कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करते हैं।

संगठन में प्रत्येक टीम के सदस्य के लिए उसकी टीम ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है, यानी इसका यह मतलब है कि संगठन की प्राथमिकताएं सर्वोपरि होती हैं जबकि उसकी अपनी प्राथमिकताएं और व्यक्तिगत हित बाद में आते हैं। टीम के कुशल निष्पादन के लिए प्रेरक कारक का होना आवश्यक है और इसके लिए यह भी आवश्यक है कि टीम का नेतृत्व एक कुशल और प्रभावी नेता द्वारा हो।

टीम-कार्य और टीम :

टीम-कार्य :

आम तौर पर टीम-कार्य को किसी आम उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लोगों के एक समूह के रूप में कार्य करने की इच्छा के रूप में समझा जाता है। उदाहरण के लिए हम अक्सर इस वाक्यांश का प्रयोग करते हैं: 'वह टीम का अच्छा खिलाड़ी है'। इसका मतलब यह है कि किसी के लिए भी टीम के हित सर्वोपरि हैं और वह टीम के हित के लिए कार्य करता है। इसलिए, टीम-कार्य उन व्यक्तियों के बीच सहयोग है जो किसी कार्य को सफल अंजाम देने में प्रयासरत हैं।

टीम :

जब लोगों का एक समूह सकारात्मक कार्य का माहौल तैयार करते हुए टीम निष्पादन में वृद्धि करने हेतु व्यक्तिगत शक्तियों को सम्मिलित करने के प्रति एक दूसरे का समर्थन करते हुए एक आम लक्ष्य की दिशा में एक साथ कार्य करता है, तो एक सफल टीम बनती है। एक टीम तभी विद्यमान है जब टीम के सदस्यों और संगठन के लिए सार्थक परिणाम देने हेतु, एक समान दिशा या उद्धेश्य की तलाश में व्यक्तिगत शक्तियों और कौशल को टीम–कार्य के साथ जोड़ा जाता है। एक टीम, निष्पादन करने की सम्मिलित वचनबद्धता के साथ व्यक्तिगत शक्तियों को जोड़ती है; यह केवल एक दूसरे के साथ अच्छे संबंध बनाने मात्र तक सीमित नहीं है।

टीमों के प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए टीम–कार्य बिल्कुल आधारभूत तत्व है। केवल तभी जब व्यक्तिगत टीम सदस्यों के कौशल और ताकत साझा लक्ष्यों के साथ जुड़ती हैं और सामूहिक निष्पादन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, आप कार्यस्थल पर एक टीम से होनेवाले लाभ को महसूस कर पायेंगे।

किसी टीम के बनने की दिशा में निम्नलिखित बिन्दु महत्वपूर्ण हैं :

- प्रवृत्ति, आपके द्वारा दिए गए मूल्य की देन है और आपके व्यवहार में अभिव्यक्त होती है। एक समूह की भावना उसके सदस्यों को सफल बनने के लिए प्रेरित करती है। आम हितों और ज़िम्मेदारियों में साझा उत्साह, एकता की भावना को बढ़ाता है।
- इसका मतलब टीम की भावना, दूसरों का सम्मान करने और उनके योगदान का मूल्यांकन करने जैसी बातों पर निहित है। इसका अर्थ यह भी है कि व्यक्तिगत रूप से कार्य करने की तुलना में एक साथ कार्य करके अधिक हासिल किया जा सकता है। इन प्रवृत्तियों को दीर्घस्थायी बनाने के बाद, इस बात की संभावना अधिक है कि टीम के सदस्य तदनुसार व्यवहार करेंगे।
- टीम–कार्य से यह पता चलता है कि लोग पारस्परिक समर्थन और विश्वास के माहौल में कार्य करते हैं, अच्छे अंतर–समूह संबंधों के साथ मिलकर कार्य करते हैं और एक दूसरे की ताकत का मूल्य होता है जिससे वे परिचित होते हैं।

- इससे संबंधों की बढ़ती परिपक्वता को भी बढ़ावा मिलना चाहिए जहां लोग रचनात्मक रूप से असहमत होने के लिए स्वतंत्र हैं और जहां दोनों समर्थन और चुनौती, टीम को कार्य करने में मदद करने का एक हिस्सा है।

वास्तविक टीम–कार्य के ज़रिए सकारात्मक प्रवृत्तियों और व्यवहार को देख पाना संभव होता है :

- अपने सहकर्मियों पर इस बारे में विश्वास करें कि वे जो वादा करते हैं उसे पूरा भी करेंगे।
- आवश्यकता होने पर मदद करने की इच्छा।
- भविष्य के संबंध में एक आम दृष्टिकोण का साझा करना।
- एक–दूसरे का सहयोग देना और एक दूसरे की ताकतों को एक साथ मिलाना।
- सकारात्मक प्रवृत्ति बनाये रखना, समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करना।
- सक्रियता के साथ सुनना।
- सभी सदस्यों द्वारा अपनी ताकतों को सही दिशा में जुटाना।
- संदेह का लाभ देना।
- सर्वसम्मति बनाना।
- झगड़ों और भिन्नमतों का सार्थक रूप से समाधान करना।
- खुला संवाद।

टीम–कार्य के फायदें :

टीम–कार्य के लाभों में बढ़ी हुई दक्षता, उसी समस्या पर विभिन्न लोगों का ध्यान केंद्रित करने की क्षमता और पारस्परिक समर्थन शामिल हैं।

बेहतर परिणाम: टीम–कार्य से बेहतर व्यावसायिक परिणाम सामने आयेंगे क्योंकि चुनौती का सामना करने के लिए टीम अधिक संसाधन जुटा सकती है और अनुपयुक्त व्यक्तिगत योगदान के जोखिम को कम करने के लिए इससे मदद मिलती है।

दक्षता: जब एक टीम अच्छी तरह से कार्य करने में सक्षम होती है तो अकेले व्यक्ति के मुकाबले सामूहिक रूप से अधिक हासिल किया जा सकता है। इससे एक संगठन को अपने बाज़ार में अधिक प्रतिस्पर्धी होने के अलावा संगठन को लागत में कमी लाने में मदद मिलती है।

बेहतर विचार: एक अच्छी टीम विविध सदस्यों से बनी है। जब ये सदस्य एक ही समस्या के लिए भिन्न–भिन्न कौशल लागू करते हैं, तो वे एक ही समस्या पर कार्य कर रहे एक व्यक्ति की तुलना में अधिक प्रभावी समाधान ढूँढ सकेंगे।

आपसी समर्थन : जब टीम एक साथ अच्छी तरह से कार्य करती है तो टीम के व्यक्ति एक–दूसरे का समर्थन करते हैं। आपसी समर्थन लोगों को उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से हासिल नहीं कर पाते हैं।

उपलब्धि हासिल करने की भावना: जब टीम के सदस्य विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एकसाथ कार्य करते हैं तो अक्सर यह पाया जाता है कि कर्मचारी द्वारा अलग से कार्य करते हुए हासिल की गयी उपलब्धि की तुलना में उससे कहीं अधिक संतुष्टि एकसाथ हासिल करने में मिलती है।

टीम कार्य के ज़रिए इन हितों को प्राप्त करने के लिए, व्यक्तिगत सदस्यों को एक साथ बेहतर तालमेल के साथ कार्य करना चाहिए। उन्हें अपनी स्वयं की उपलब्धियों के विचारों को अलग करते हुए टीम के हित के लिए कार्य करना होगा।

एक टीम की सफलता का क्या राज़ है ?

टीम की सफलता के कई कारक हैं जो महत्वपूर्ण हैं। उनमें निम्न शामिल हैं:

- टीम के मिशन की साझा समझ।
- टीम के लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता।
- स्पष्ट रूप से परिभाषित भूमिकाएं और ज़िम्मेदारियां ।
- कार्य करने के संबंध में सामान्य दिशानिर्देशों की सहमति।
- एक स्थापित निर्णय लेने वाला मॉडल।

एक सफल टीम के साथ कार्य करना एक रोमांचक और सशक्त अनुभव हो सकता है। जब कोई टीम बेहतर रूप से कार्य कर रही होती है तो प्रत्येक सदस्य जानता है कि इस कार्य में शामिल व्यक्तियों की तुलना में वह अपेक्षाकृत बड़ी टीम का एक हिस्सा है – यह कि टीम अपने हिस्सों के योग से अधिक बड़ी है। उच्च निष्पादन करने वाली टीमों में, टीम के सदस्यों को इस बात का अहसास बना रहता है कि टीम बाधाओं को दूर करते हुए अपने लक्ष्यों को हासिल कर सकती है। संप्रेषण खुला है; सदस्य इस बात को भली–भांति जानते हुए कि राय में मतभेद आमंत्रित है, अपनी राय दे सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सफल टीम केवल अच्छा महसूस करने मात्र में विश्वास नहीं रखती, बल्कि वे कार्य की समय–सीमा का ध्यान रखते हुए अपने लक्ष्यों को हासित करती है।

एक टीम के प्रभावी खिलाडी कैसे बनें :

एक दूसरे पर भरोसा करने और एक इकाई के रूप में कार्य करने के लिए कार्यस्थल पर टीम के सदस्य की गतिविधियां बहुत ही महत्वपूर्ण हैं । व्यक्तियों को कार्यस्थलों पर टीम के रूप में कार्य करना चाहिए ताकि कार्य बहुत तेज गति से पूरा हो और गलतियों को काफी हद तक कम किया जा सकें । एक व्यवसायिक टीम के सदस्य बनने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव नीचे दिए गए हैं :

- टीम के सदस्यों को अपने स्तर से सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए एक दूसरे के साथ लचीले और संगत व्यवहार बनाये रखना होगा।
- एक टीम में रूप में कार्य करने वाले व्यक्तियों की तुलना में एक अकेले व्यक्ति को कार्य पूरा करने में अधिक समय लगता है।
- एक पेशेवर व्यक्ति को नकारात्मक विचारों से घिरे दिमाग के साथ कार्यालय में प्रवेश नहीं करना चाहिए। यह देखा गया है

कि जो लोग पहले से ही किसी अन्य बात से परेशान हैं वे प्राय: अपने सहकर्मियों या आसपास बैठे लोगों से झगड़ते हैं।

- अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को बाहर रखते हुए आपको कार्यालय में कदम रखना होगा। जब आप कार्यस्थल पर हों तो शांत और रचनात्मक मन बनाये रखने का प्रयास करें।
- कोई भी टीम विभिन्न विचारों वाले व्यक्तियों से बनी होती है। यह विचार एक दूसरे के विरोधी भी हो सकते हैं। ऐसे में ज़रूरी होगा कि टीम के सदस्यों के कार्य आपसी गुटबंदी या निजी स्वार्थ में न उलझ कर लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में ही आगे बढ़ें।
- टीम के सदस्य को संघटित बने रहना चाहिए। स्वयं को थोड़ा और नियंत्रित और लचीला बनाये रखें। खुद को परिस्थितियों के अनुकूल ढालना आवश्यक है।
- सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनायें और हमेशा दूसरों में दोष न ढूंढ़ें। कभी भी कार्यस्थल पर पीठ पीछे बुराई करने या अनावश्यक प्रतिक्रिया देने से बचें।
- ज़िम्मेदारियों को तभी स्वीकार करें जब आपको उसमें रुचि हो। साथ ही अपनी टीम के प्रबंधक के साथ अपनी क्षमताओं, विशेषज्ञताओं और रुचियों पर चर्चा करें और उसके बाद ही किसी भी भूमिका और ज़िम्मेदारी के लिए हाँ कहें।
- आपको सौंपे गए कार्य के प्रति अपना ध्यान केंद्रित करें। किसी प्रश्न के मामले में, अपनी बात को अपने आप तक सीमित न रखें, इसके बजाय अपने अगले वरिष्ठ अधिकारी से इस संबंध में चर्चा अवश्य करें।
- लोगों की मदद करने का मतलब यह नहीं है कि आप दूसरों को अपने सभी पेशेवर रहस्यों का खुलासा करेंगे, हालांकि थोड़ा विनम्र बने रहना आवश्यक है।
- जब भी उन्हें आपकी मदद की ज़रूरत होती है उनकी सहायता करें, लेकिन सुनिश्चित करें कि आप उनके कार्य में बहुत ज्यादा हस्तक्षेप नहीं करते हैं। एक दूसरे के लिए थोड़ी जगह अवश्य दें।

- एक पेशेवर व्यक्ति को अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सामने खड़े होने और अपनी बात सभी को स्पष्ट करने का साहस होना चाहिए। अफवाह आदि पर विश्वास न करें और कभी स्वयं किसी भी बात की कल्पना न करें।
- कार्यस्थल पर इच्छित दिनांक व समय पर स्मरण दिलाने हेतु प्लैनरों व आर्गनाइज़रों का प्रयोग करें। इसके लिए आप डेस्क कैलेंडर का भी उपयोग कर सकते हैं और डेस्क पर उसे अपने सामने रख सकते हैं।
- व्यक्ति को चाहिए कि अपने सहयोगियों के साथ पारदर्शी बने रहें। आपको यह पता होना चाहिए कि कौनसी जानकारी को साझा करना चाहिए और कौनसी नहीं।
- यदि आपका परामर्शदाता आपके साथ ऐसी जानकारी साझा करते हैं जिसे दूसरों को भी दी जानी चाहिए, तो ऐसी जानकारी आपको स्वयं तक सीमित नहीं रखनी चाहिए। कभी भी जानकारी के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश न करें और उस जानकारी को उसी रूप में दूसरों तक पहुँचाएं।
- कार्यस्थल पर एक दोस्ताना रवैया बनाये रखें। अपने सहकर्मियों के साथ बर्ताव केवल सहयोगियों के रूप में न करें। कार्यस्थल पर भी आपके दोस्त हो सकते हैं ; दरअसल आप अधिकतम समय उनके साथ बिताते हैं, लेकिन बहुत अधिक नज़दीकिया कायम करते हुए बहुत सारी बातों का खुलासा करने से बचें।

- टीम के सदस्यों के बीच वैचारिक आदान–प्रदान बिना रुकावट, स्पष्ट और निर्धारित योजना की सफलता की दिशा में होना चाहिए। विचारों का आदान–प्रदान दो–तरफा होना चाहिए।
- एक अच्छा संप्रेषक बनें। कार्यस्थल पर एक पेशेवर दृष्टिकोण बनाये रखें। एक दूसरे की क्षमताओं, विचारों और प्रतिक्रियाओं के प्रति आदर की भावना रखें। कभी भी किसी के खिलाफ अपमानजनक कथन का प्रयोग न करें।
- व्यक्ति को कार्यस्थल पर अनुशासित बने रहना होगा। यदि टीम की बैठक 10 बजे है, तो सुनिश्चित करें कि आप कार्यालय में 9.45 बजे उपस्थित रहते हैं।
- अपने पहनावे का भी ख्याल रखें। वांछित प्रभाव बनाने के लिए व्यक्ति को अच्छे कपड़े पहनना चाहिए। यदि आप अनचाहे तरीके से कपड़े पहनते हैं तो लोग आपको गंभीरता से नहीं लेंगे।

निष्कर्ष :

किसी भी संगठन में एक सार्थक टीम की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति दूसरों के साथ कैसे समायोजन करते हैं, जितना बेहतर समायोजन होगा टीम भी उतनी ही बेहतर होगी। ऐसे समय में जब संगठन वैश्विक स्वरूप धारण कर रहे हैं, विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए टीम भावना से कार्य करना पहले से अधिक ज़रूरी हो गया है। यह वह ऊर्जा है, जो सामान्य व्यक्ति को विशिष्ट लक्ष्य हासिल करने के काबिल बना देती है। अत:, टीम वर्क से किसी भी कार्य को, चाहे वह सरल हो या कठिन, कम समय में बेहतर अंजाम दिया जा सकता है।

केनरा बैंक को 'राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन रत्न सम्मान'

परिवर्तन राजभाषा अकादमी, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2021 हेतु केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूरु को सरकारी कार्य एवं प्रचार–प्रसार में राजभाषा हिंदी के विशेष प्रयोग के लिए 'राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। परिवर्तन राजभाषा अकादमी, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 18.10.2021 से 20.10.2021 तक गुवाहाटी में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय विशेष राजभाषा 'हिंदी आवासीय कार्यशाला एवं संगोष्ठी' के दौरान दिनांक 20.10.2021 को आयोजित समापन समारोह में श्री ओमप्रकाश एन एस., वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अजय जमवाल, प्रभारी पूर्वोत्तर भारत, भा ज पा के कर कमलों से बैंक की ओर से यह पुरस्कार ग्रहण किया गया।

आलेख

वे दिन भी क्या दिन थे

शीला कुमारी वर्मा
अधिकारी (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, गाज़ियाबाद

चारों तरफ खौफ और बेबसी का मंज़र। हर चेहरा मायूस और परेशान। आज भी ऑफिस जाते हुए रास्ते वीरान थे। कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। इस कोरोना महामारी ने पूरे देश को अपने चादर में लपेट लिया है। चारों तरह त्राहि–त्राहि का मंज़र। आज जहां पूरी दुनिया कोरोना महामारी की चपेट में है, पूरा देश इस महामारी की विनाश लीला से ग्रसित है। संक्रमण की तेज गति ने मानो मानव को मानव से दूर कर दिया है। आज लोग एक दूसरे को शक की नज़र से देखने लगे हैं। आज भी ऑफिस जाते हुए मेरे परिवार को फिर से मेरी चिंता थी और मुझे उनकी।

इस महामारी में भी हर रोज़ कई लोग शाखा में आते हैं। कई लोगों के साथ हमारा संपर्क बराबर बना रहता है। हर रोज़ मन में डर रहता है। हर रोज़ कोरोना से संक्रमित हो जाने के भय के साथ हम अपनी शाखा में जाते थे। बस मास्क और सेनीटाइज़र हमारा सहारा था।

रोज़ की तरह आज मैं वीरान रास्ते को देखते हुए, लोगों के मायूस चहेरे को पढ़ते हुए ऑफिस पहुंची। आज दीपिका नहीं आई थी। हर रोज़ वह सही समय पर आ जाती थी। लेकिन अभी तक नहीं आई थी। मैंने सोचा क्यों न फोन करके पूछ लिया जाए। लेकिन काम कुछ ज्यादा होने के कारण मैं भूल गई कॉल करने को। लंच का समय कब आ गया पता ही नहीं चला। मुझे फिर से दीपिका की याद आई। उसके बारे में जानने के लिए बेचैन थी। शाखा में वह मेरी सबसे अच्छी साथी थी। काम में कोई परेशानी होने या कोई सुझाव के लिए वह हमेशा मेरे पास ही आती थी। हम दोनों के बीच मैडम से ज्यादा दोस्ती जैसा संपर्क था। फोन नहीं लग रहा था। किसी एक स्टाफ से पता चला कि उसे कोरोना हो गया है। यह सुनकर मानों जैसे पैरों–तले ज़मीन खिसक गई। बस मन में एक ही सवाल था–आखिर कैसे। वो तो शाखा में सबसे ज्यादा सावधानी बरतती थी। निरंतर अंतराल पर सेनीटाइज़र लगाना और मास्क पहना। उसके मास्क कभी उतरते भी नहीं थे। फिर कैसे, किससे हुआ। हम ऑफिस में छः स्टाफ थे, हर कोई एक दूसरे को शक की निगाह से देखने लगा। अगले ही दिन जाकर हम सभी ने अपना कोरोना टेस्ट कराया। ईश्वर की कृपया से हम सभी के रिज़ल्ट नेगेटिव आया।

हफ्ते बीत चुके थे, रोज़ की तरह जीवन को खतरे में डालकर आज मैं ऑफिस के लिए निकली। मुझे आज ऑफिस जाने का मन नहीं कर रहा था, लेकिन जाना तो था ही। ग्राहक को कैश देते समय मेरे फोन की रिंग बजी ।

टरिंग ... टरिंग ...! मैं फोन नहीं उठा पाई। दोबारा रिंग होने पर मैंने फोन उठाया । '....दीपिका .... दीपिका'! कुछ सही से सुनाई नहीं दे रहा था। मेरे साथी की आवाज़ मुझे स्पष्ट से सुनाई नहीं दे रही थी। मैंने दोबारा कॉल किया। फोन व्यस्त था। मेरे मन में शंकाएं गहराती जा रही थीं। उथल–पुथल के बीच बस मैं ईश्वर से दीपिका के मंगलमय स्वास्थ की कमाना करने लगी।

फिर से फोन बजी।

टरिंग... टरिंग! फोन उठाते ही सुनाई दिया... 'मैम... मैम... दीपिका'... मैंने दोबारा पूछा... 'क्या... क्या हुआ'। मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन बस वही उत्तर... 'दीपिका... नहीं रही'। मेरे मुंह से बस एक ही आवाज़ निकली – 'हे भगवान... हे भगवान'! मेरे हाथों से मोबाइल गिर गई। मैं सामने की कुर्सी में बैठ गई। मेरी आँखों के सामने दीपिका के साथ बिताए हुए हर वह पल याद आने लगी। एक साथ ऑफिस आना, छुट्टियों में घूमने जाना, फिल्म देखना, एक साथ लंच करना। लंच में वह अपने परिवार के बारे में ही बात करती थी, कैसे उसकी 2 साल की बच्ची

शैतानी करते हुए उसे परेशान किया करती थी। वो दिन भी क्या दिन थे। न कोई डर न मास्क पहनने की बेबसी। परिवार के साथ घूमने जाना, बच्चे के हस्ते–मुस्कराते चहरे से मन को जैसे शांति मिलती थी।

आज कोरोना महामारी ने सब कुछ छीन लिया। न जाने यह कोरोना महामारी अपनी विनाश लीला में और कितने लोगों को अपनी गिरफ्त में लेगी और कितने परिवार टूटेंगे और कितने लोग बेबस होंगे, कितने साथियों का साथ छूटेगा। हम बैंकर्स दिन–रात इस महामारी से जनता की रक्षा करने के लिए काम कर रहे हैं। हमारे कंधों पर देश की अर्थव्यवस्था का भार है और अपने परिवार का भी। फिर भी हम बस जनता की सेवा करना हमारा मूल कर्तव्य समझते हैं। इसीलिए, अपने और अपने परिवार के जीवन की परवाह न करते हुए देश की सेवा करना ही मूल धर्म होता है। कोरोना की लहर ने मुझे भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था से रूबरू कराया। हमें अपने देश की स्वास्थ्य व्यवस्था को निरंतर दुरुस्त करने की बहुत ज़रूरत है ताकि हम ऐसे किसी भी महामारी का सामना न्यूनतम नुकसान के साथ करने में सक्षम हो सकें। मुझे ईश्वर के न्याय पर अटूट विश्वास है। जल्द ही एक नया सवेरा आएगा। फिर से पटरी पर ज़िंदगी वापस

लौटेगी। जल्द ही यह कोरोना वायरस इस दुनिया से विलुप्त हो जाएगा। बस तब तक ईश्वर पर अपनी आस्था और दो गज़ की दूरी को बनाए रखना है।

पानी का गिलास

एक मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर, दर्शकों को तनाव प्रबंधन के बारे में व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने पानी का एक गिलास उठाया और सभी से पूछा– ''आपको क्या लगता है कि यह पानी का गिलास कितना भारी है''? दर्शकों ने भिन्न–भिन्न उत्तर दिए। किसी ने कहा कि इसका वजन 50 ग्राम है तो और किसी ने कहा कि 100 ग्राम। लेकिन प्रोफेसर ने कहा कि ''कांच का वजन मायने नहीं रखता। यह वास्तव में इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसे अपने हाथ में कितनी देर तक पकड़कर रखते हैं। कुछ समय तक के लिए इस तरह पकड़कर रखने से कोई समस्या नहीं होगी। कुछ समय के बाद, हमें हल्का सा दर्द होने लगेगा। किंतु यदि हम इसे कुछ घंटों के लिए यूं ही पकड़कर रखेंगे, तो हाथ में अत्यधिक दर्द होने लगेगा। लेकिन कांच का वजन कभी नहीं बदलेगा। जितनी देर हम इसे पकड़कर रखते हैं, यह उतना ही भारी लगेगा।'' फिर उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा, ''दरअसल हमारे जीवन के तनाव और चिंताएं पानी के प्याले की ही तरह हैं। उनके बारे में कुछ देर तक सोचते रहने से कुछ फर्क नहीं पड़ेगा, किंतु उनके बारे में अधिक देर तक सोचते रहने से दु:ख होने लगेगा और आप असहाय महसूस करेंगे। अपने तनावों को जाने देना महत्वपूर्ण है और इसी में हमारी भलाई भी है। उन्हें घंटों, दिनों और महीनों तक आगे न ले जाएं। गिलास नीचे रखना याद रखें यानी समस्या का दर–किनार करें।

आलेख

बैंकों में साइबर सुरक्षा

बैंकों में साइबर सुरक्षा काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि बैंकों ने डिजिटलीकरण, समकक्ष बैंकों से प्रतिस्पर्धा, ग्राहक संतुष्टि, लेनदेन लागत में कमी के नाम पर अपने आईटी प्लेटफार्म ग्राहकों के लिए खोल दिए हैं। गोपनीय डेटा की विशाल मात्रा बैंक के डेटा केंद्रों में रहती है और बैंक के सर्वर और विभिन्न नेटवर्क एवं उपकरणों के माध्यम से परिचालित होती है। बैंक के गोपनीय डेटा एवं आईटी प्रणालियों की सुरक्षा के साथ–साथ ग्राहकों की निजी जानकारी की सुरक्षा और कारोबार की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए साइबर सुरक्षा नीति तथा साइबर सुरक्षा ढांचा आवश्यक है। नवंबर 2016 में विमुद्रीकरण के बाद से सरकार के प्रोत्साहन ने नए डिजिटल बैंकिंग ग्राहकों में अभूतपूर्व तेजी लाई है और डिजिटल भुगतान ने रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज की है। बैंकों ने विभिन्न नई मोबाइल बैंकिंग तकनीकों जैसे–वॉलेट्स, उपयोगिता बिल भुगतान, 24x7 निधि अंतरण आदि को लागू करने के लिए काफी परिश्रम किया है। बैंकों द्वारा बहुत सारे मोबाइल एप्लिकेशन विकसित किए गए थे और अधिकांश नए डिजिटल उपयोगकर्ता डिजिटल बैंकिंग चैनल में नए उपयोगकर्ता थे। इसने बैंकों और वित्तीय संस्थाओं में साइबर सुरक्षा की पुन: सक्रियता पर अधिक ध्यान देने का महत्व सरेखित किया। जैसा कि विभिन्न संगठनों पर लगातार साइबर हमले किए जाते हैं, ऐसे हमलों के लिए बैंक पसंदीदा स्थान बन गए हैं क्योंकि बैंकिंग क्षेत्र के तहत सर्वाधिक्त वित्तीय लेनदेन किए जाते हैं। साइबर अपराधियों द्वारा प्रयुक्त नवाचार पद्धतियों से बैंकों को काफी नुकसान हो रहा है। इसके कारण बैंकों के शीर्ष प्रबंधन के लिए उच्च स्तर पर साइबर सुरक्षा बढ़ गई है।

साइबर सुरक्षा क्या है ?

बैंकों में साइबर सुरक्षा के तहत कंप्यूटर संपत्तियों, सूचना तकनीकी एवं नेटवर्क को अनधिकृत उपयोगकर्ताओं से बचाने और व्यावसायिक निरंतरता तथा आपदा प्रबंधन की तैयारी के उपाय शामिल हैं। इसमें सूचना सुरक्षा, एप्लिकेशन सुरक्षा, नेटवर्क सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन प्रणाली शामिल हैं। कई वर्षों से, सूचना सुरक्षा ने मुख्य सिद्धांतों के लिए गोपनीयता, अखंडता एवं सुलभता को अपनाया है। तथापि, अन्य सिद्धांत जैसे प्रामाणिकता, गैर–अस्वीकरण और उत्तरदायित्व भी अब महत्वपूर्ण विचार बन रहे हैं। बैंकों के सामने आने वाले कुछ सामान्य खतरे हैं – मालवेयर, रैनसमवेयर, फिशिंग, स्पीयर फिशिंग / व्हेलिंग, एसक्यूएल इंजेक्शन अटैक, क्रॉस साइट स्क्रिप्टिंग, सेवा से इनकार (डीओएस), सोशल इंजीनियरिंग, वेबसाइट में बिगाड़ आदि।

गणेश गुजर
अधिकारी (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे–II

साइबर मौजूदगी में जोखिम :

बैंकों पर साइबर हमले का प्रभाव विभिन्न तरीकों से हानिकारक हो सकता है जिसमें वित्तीय हानि, महत्वपूर्ण डेटा हानि, व्यावसायिक व्यवधान/हानि, ब्रांड छवि खराब होना, कानूनी विवाद, नियामक दंड आदि शामिल हैं। जैसा कि बैंक, शाखा बैंकिंग से 24x7 बैंकिंग में परिवर्तित हुए है, उन्हें अपने नेटवर्क के एक क्षेत्र को इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग जैसे अपने वेब आधारित तथा मोबाइल आधारित एप्लिकेशनों तक पहुंच बनाने वाले ग्राहकों को उजागर करना था। साइबर विरोधी नेटवर्क में कमज़ोरियों के कारण धोखाधड़ी, डेटा चोरी, व्यापार में व्यवधान आदि मामले सामने आ रहे हैं। दुनिया भर के संगठन साइबर अपराध के बारे में चिंतित हैं, क्योंकि वे तकनीकी रूप से साइबर अपराधों, व्यावसायिक व्यवधान, सार्वजनिक धारणा और ग्राहक आधार में कमी के बारे में चिंतित हैं। किसी हमले के तकनीकी निहितार्थ को समझना अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि कई संगठन आकस्मिक प्रबंधन टीमों को नियुक्त करते हैं। किसी हमले

का विश्लेषण एवं व्यावसायिक परिचालन बहाल करना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि संगठन एक ही हमले या इसी तरह के हमलावर के शिकार न हों। किसी साइबर घटना के मद्देनज़र, तकनीकी मुद्दों का तुरंत समाधान किया जा सकता है, किंतु सार्वजनिक ब्रांड धारणा एवं ग्राहक प्रतिधारण को पुन:बहाल करने में अत्यधिक समय लगता है।

भारत में बैंकों हेतु साइबर खतरे की पृष्ठभूमि :

बैंक विभिन्न प्रकार के साइबर अपराध और ऑनलाइन धोखाधड़ी के लिए अतिसंवेदनशील हैं। साइबर अपराधी अधिक परिष्कृत और संगठित हो गए हैं और वे लगातार मात्रा, आवृत्ति और उग्रता के साथ हमले कर रहे हैं। मालवेयर के अपराधी विभिन्न प्रकार के मालवेयर हमलों का आविष्कार कर रहे हैं और उन्हें प्रयुक्त कर रहे हैं। सेवा से इनकार की गतिविधि लगातार बढ़ रही है तथा काफी विकसित हो रही है क्योंकि वे ऐसे हमलों का संचालन करने के लिए आईओटी (इंटरनेट ऑफ थिंग्स) उपकरणों को प्लैटफार्म के रूप में उपयोग कर रहे हैं। भारत की कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (सीईआरटी–इन) द्वारा एकत्र की गई जानकारी के अनुसार क्रमश: 2014, 2015 और 2016 के दौरान भारत में 44,679, 49,455 और 50,362 साइबर सुरक्षा पर हमले की घटनाएं हुई हैं। इन घटनाओं में फ़िशिंग, वेबसाइट घुसपैठ एवं बिगाड़, वायरस और सेवा के अस्वीकरण पर हमलें शामिल हैं। स्किमिंग, मालवेयर के हमलों, अंतर्गत सूत्रों द्वारा क्रेडेंशियल्स का समझौता आदि के कारण क्रेडिट और डेबिट कार्ड धोखाधड़ी में कई गुना वृद्धि हुई है। एटीएम में स्किमिंग करना बहुत आम हो गया है और स्विच या किसी भी बैंक के एटीएम में सुरक्षा कई बैंकों को प्रभावित करती है और सभी बैंकों के परिवेश प्रणाली को नुकसान पहुंचा सकती है। बैंक ग्राहकों को मोबाइल बैंकिंग प्रदान करते हैं और एप्लिकेशन विभिन्न प्लेटफार्मों और उपकरणों पर चलते हैं। अक्सर बैंक सभी कमज़ोरियों की परिकल्पना नहीं कर सकते हैं और इसका फायदा अपराधियों द्वारा किया जाता है। 40% से अधिक बैंकिंग लेनदेन मोबाइल उपकरणों के माध्यम से हो रहे हैं। बैंकों के मोबाइल एप्लिकेशन में सॉफ्टवेयर कमज़ोरियों का फायदा उठाया जा रहा है और कुछ व्यावसायिक संवाददाताओं द्वारा आधार सक्षम भुगतान प्रणाली में धोखाधड़ी भी सामने आई हैं। सीमा पार लेनदेन के लिए बैंक के स्विफ्ट प्रणाली तक गैर–कानूनी पहुंच के माध्यम से निधि अंतरण या वचन पत्र/चुकौती आश्वासन पत्र के लिए बैंक के स्विफ्ट प्रणाली क्रेडेंशियल्स के दुरुपयोग में वृद्धि हुई है। हाल ही में भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंकों को

एलओयू और एलओसी जारी करने से रोकने की सलाह दी है। ई–मेल साइबर अपराध के लिए वाहक बन गया है और नौसिखिए/निरपराध ई–मेल उपयोगकर्ता फिशिंग हमलों के शिकार हो रहे हैं। ई–मेल लॉगिन विवरण जैसे ग्राहकों की गोपनीय जानकारी चुराने के लिए एक उपकरण बन गया है। व्यावसायिक ई–मेल समझौता (बीईसी) घोटाले, ग्राहक के खातों से भारी मात्रा में धनराशि निकाल रहे हैं।

सिमेंटेक की रिपोर्ट के अनुसार साइबर अपराधियों ने सरल आईटी टूल और क्लाउड सेवाओं की अपेक्षा आईटी सेवाओं को अधिकतर बिगाड़ा है। सरकारों को साइबर हमले के लिए लक्षित किया जाता है और आर्थिक जासूसी से लेकर राजनीतिक रूप से प्रेरित तबाही और विनाश किया जाता है। क्लाउड एक खतरनाक जगह बन गया है और क्लाउड बुनियादी संरचनाओं में कमज़ोरियां साइबर अपराध के लिए अवसर प्रदान करती हैं।

बैंकों ने सुरक्षा परिचालन केंद्रों का प्रबंधन या बाह्यस्त्रोतीकरण करके अपनी सीमा सुरक्षा को मजबूत किया है तथा निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया है:

1. सीआईईएम (सुरक्षा सूचना एवं प्रसंग प्रबंधन)
2. असुरक्षितता प्रबंधन
3. एनबीएडी (नेटवर्क प्रवृत्ति में विसंगति का पता लगाना)
4. एंटी–एपीटी (उन्नत सतत खतरे का विरोध)
5. डीडीओएस (वितरित सेवा का अस्वीकरण)
6. एंटी–फिशिंग, मालवेयर निगरानी
7. पीआईएम (विशेषाधिकार पहचान प्रबंधन)

8. एफआईएम (फाइल प्रामाणिकता प्रबंधन)
9. डब्ल्यूएएफ (वेब एप्लिकेशन फिल्टरिंग)

साइबर सुरक्षा डेटा सेंटर सीमा से परे क्लाउड तक और एनालिटिक्स का उपयोग करते हुए, आईपी प्रोफाइलिंग से साइबर विरोधियों की चतुरता से आगे निकल गई है। हमलावर अंतिम असुरक्षितता और खराब सुरक्षा नियंत्रण का लाभ उठाते हुए अपनी पहचान छुपाने के लिए हमले के तरीके बदल रहे हैं।

साइबर सुरक्षा में चुनौतियां :

सुरक्षा जोखिम की अनुक्रिया है। पहचान आवश्यकता की अनुक्रिया है, और जब तक उस आवश्यकता को स्पष्ट रूप से नहीं समझा जाता है, जिसे बैंक जानना चाहता है, तो यह बहुत नुकसानदायक होगा। कई साइबर अपराधी उन संगठनों की ज्ञात नेटवर्क कमज़ोरियों का फायदा उठा रहे हैं जिन्होंने आधारभूत साइबर सुरक्षा को भी लागू नहीं किया है। साइबर विरोधी आसान लक्ष्य के लिए साइबर परिवेश में जुड़ी सभी प्रणालियों/उपकरणों को स्कैन करते रहते हैं जो साइबर सुरक्षा कार्यान्वयन में कमज़ोर हो जाते हैं। किसी संगठन के साइबर जोखिम का आकलन करते समय ज़रूरी चरण महत्वपूर्ण संपत्ति, मूल्यवान जानकारी, उस जानकारी से जुड़े खतरों और जोखिमों की पहचान करना तथा ऐसी जानकारी के उल्लंघन के जोखिम को रेखांकित करना है। कई बार यह देखा गया है कि ऐसी आईटी प्रणाली होती है जो साइबर सुरक्षा के दायरे में नहीं आती हैं। ग्राहक गोपनीयता उल्लंघन के तरीके जैसे–कार्ड डेटा चोरी होना, अनुचित सुरक्षा उपायों के कारण व्यक्तिगत डेटा का रिसाव, अन्य पार्टी द्वारा अनधिकृत डेटा साझा करना आदि कई जगहों पर हो सकता है। प्रौद्योगिकी के विकास के साथ साइबर खतरे, साइबर हमलों ने भी अगली पीढ़ी के रैनसमवेयर, वेब अटैक आदि का रूप ले लिया है।

अधिकांश साइबर अपराधियों का इरादा पैसा हड़पना होता है और इसलिए बैंक एवं वित्तीय संस्थाएं उनके पसंदीदा लक्ष्य होते हैं। रैनसमवेयर बड़े पैमाने पर व्यक्तियों से संगठनों तक धन की जबरन वसूली का आसान तरीका बन गया है। साथ ही फिशिंग मेल के ज़रिए जानकारी की चोरी और व्हेलिंग के ज़रिए धन राशि की हेराफेरी भी बढ़ रही है।

उपभोक्ता, बैंकिंग सेवाओं को विभिन्न उपकरणों से एक्सेस करते हैं और फिर भी वे बैंक से आश्वस्त होना चाहते हैं कि उनके व्यक्तिगत डेटा की रक्षा की जाएगी, चाहे एक्सेस के लिए उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरण कोई भी हो। ग्राहकों द्वारा प्रयोग किए जा रहे विभिन्न प्रकार के उपकरणों से खतरों का प्रबंधन करना एक चुनौती है। साथ ही बैंक के कर्मचारियों और ग्राहकों में साइबर खतरों और उनके गंभीर परिणामों के बारे में जागरूकता की कमी भी बैंकों के लिए बड़ी चुनौती है। भारत और विदेशों में भी नियामक अनुपालन का प्रबंधन और पालन करना बैंकों के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण हो गया है। विगत कुछ वर्षों में विनियमों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है और सभी बैंकों को विनियामक दायित्वों को पूरा करना अनिवार्य बन गया है।

सरकार और नियामक द्वारा समर्थन तथा पर्यवेक्षण :

भारतीय रिज़र्व बैंक, एमईआईटीवाई (MEITY), आईबी–कार्ट, सीईआरटी–आईएन (CERT-IN), एनसीआई–आईपी द्वारा साइबर सुरक्षा ढांचे को स्थापित करने, साइबर हमलों पर मार्गदर्शन, चेतावनी और निगरानी में महत्वपूर्ण प्रयास चल रहे हैं। भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपने परिपत्र डीबीएस.सीओ.–आईटीसी.बीसी सं.6/31.02.008/2010–11 दिनांक 29 अप्रैल 2011 के माध्यम से सूचना सुरक्षा, इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग, प्रौद्योगिकी जोखिम प्रबंधन और साइबर धोखाधड़ी पर दिशानिर्देश प्रदान किए थे, जिसमें यह संकेत दिया गया था कि कार्यान्वयन के लिए सुझाए गए उपाय स्थायी नहीं हो सकते हैं और बैंकों को अपनी नीतियों, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों को अद्यतन पद्धतियों और उभरती चिंताओं के आधार पर सक्रिय रूप से सक्षम बनाने/सुधारने/संशोधित करने की आवश्यकता है। भारतीय रिज़र्व बैंक ने 2 जून 2016 को एक व्यापक परिपत्र जारी किया था, जिसमें बैंकों में मजबूत साइबर सुरक्षा/लचीलायुक्त ढांचा स्थापित करने और निरंतर आधार पर बैंकों के बीच पर्याप्त साइबर सुरक्षा तैयारियों को सुनिश्चित करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया गया था जिसकी मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- बैंकों के पास बोर्ड द्वारा अनुमोदित एक साइबर–सुरक्षा नीति होनी चाहिए जो बैंक की व्यापक आईटी नीति / आईएस सुरक्षा नीति से अलग होनी चाहिए।
- बैंक सुरक्षा संचालन केंद्र के माध्यम से वास्तविक समय में साइबर जोखिम स्थापित करें और साइबर खतरों की निगरानी और प्रबंधन के लिए निरंतर निगरानी की व्यवस्था करें।

- बैंकों द्वारा कार्यान्वित करने के लिए न्यूनतम आधारभूत साइबर सुरक्षा और लचीलायुक्त ढांचा स्थापित किया गया है।
- साइबर संकट प्रबंधन योजना तुरंत विकसित की जानी चाहिए जो बोर्ड द्वारा अनुमोदित समग्र रणनीति का एक हिस्सा होनी चाहिए।
- बैंकों को साइबर सुरक्षा की घटनाओं पर भारतीय रिज़र्व बैंक के साथ सूचना साझा करनी चाहिए।
- बैंकों द्वारा हितधारकों/शीर्ष प्रबंधन/बोर्ड के सदस्यों के बीच साइबर सुरक्षा संबंधी जागरूकता लाना आवश्यक है।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंकिंग पर्यवेक्षण विभाग के तहत एक साइबर कक्ष बनाया था और विभिन्न साइबर सुरक्षा और आईटी परीक्षण के लिए प्रत्येक बैंक को शामिल करते हुए एक अलग आईटी परीक्षण किया था। भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी रिपोर्टों के आधार पर अंतर विश्लेषण किया है और बैंकों को अंतराल को मिटाने के लिए कहा है। आईबी–कार्ट, सीईआरटी–आईएन, एनसीआईआईपी बैंकों को भौतिक और साइबर घटनाओं (घटनाओं/खतरों/भेद्यताओं) और बैंक के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकियों से जुड़े रेजल्यूशन या समाधान से संबंधित सूचनाओं को प्रसारित करने और साझा करने में मदद करता है।

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 और तत्पश्चात् के संशोधनों में डिजिटल हस्ताक्षर, ई–शासन, न्याय वितरण प्रणाली, अपराध और दंड पर ध्यान केंद्रित किया गया है। लगातार बदलते साइबर परिवेश तथा हमलों के आलोक में अधिनियम के दायरे और परिभाषाओं को बढ़ाने की आवश्यकता है।

शीर्ष प्रबंधन की भूमिका :

बैंकिंग प्रणाली पर साइबर खतरों के प्रभाव को शीर्ष प्रबंधन द्वारा अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए तथा साइबर जोखिम के प्रबंधन के लिए साइबर–सुरक्षित वातावरण बनाने के लिए पूरे संगठन की प्रतिबद्धता बहुत आवश्यक होती है। इसके लिए सभी स्तरों पर कर्मचारियों के बीच गहन जागरूकता की आवश्यकता होगी। शीर्ष प्रबंधन और बोर्ड को भी खतरों की बारीकियों के बारे में उचित जागरूकता का होना आवश्यक है। बैंकों को अपने ग्राहकों, विक्रेताओं, सेवा प्रदाताओं और अन्य संबंधित हितधारकों के बीच बैंक के साइबर लचीलेपन संबंधी उद्देश्यों की समझ को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए और उनके समकालिक कार्यान्वयन और परीक्षण का समर्थन करने के लिए उचित कार्रवाई सुनिश्चित करनी चाहिए।

ग्राहक / कर्मचारी जागरूकता :

कर्मचारियों व ग्राहकों सहित सभी हितधारकों की भागीदारी के बिना अकेले सीआईओ और सीआईएसओ द्वारा साइबर सुरक्षा का मुकाबला नहीं किया जा सकता है। बैंकिंग संस्कृति में जिस दिन से कर्मचारी की भर्ती होती है, उस दिन से ही सुरक्षा जागरूकता शुरू होनी चाहिए। कर्मचारियों के प्रशिक्षण के हिस्से के रूप में, बैंक साइबर हमलों के अनुकरण को शामिल किया जा सकता है ताकि कर्मचारी उन खतरों को समझ सकें जिनका उन्हें सामना करना पड़ सकता है। साइबर सुरक्षा से संबंधित पाठ्यक्रमों के लिए प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी और प्रोत्साहन के माध्यम से कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। अक्सर किसी कर्मचारी को प्रतिष्ठित साइबर सुरक्षा प्रमाणन के लिए प्रोत्साहित करना उसे आंतरिक प्रशिक्षण से बेहतर बनाता है।

उपसंहार :

साइबर खतरा एक सार्वत्रिक घटना है और बैंक साइबर परिवेश का हिस्सा हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में होने के कारण प्रत्येक संगठन को सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है क्योंकि किसी भी संगठन के किसी साइबर सुरक्षा से समझौता संबंधी परिवेश में अन्य संस्थाओं को उजागर कर सकता है। साइबर सुरक्षा तंत्र गतिशील होना चाहिए और रक्षा लचीलापन और आश्वासन सुनिश्चित करना चाहिए। सूचना सुरक्षा बैंकों को सुरक्षा उल्लंघनों में बदलने से पहले जोखिमों को कम करने में मदद कर सकती है। ऐसी कोई एकल रणनीति नहीं है जो साइबर सुरक्षा घटनाओं की रोकथाम की गारंटी देती हो। भारतीय बैंकिंग उद्योग ने अत्यधिक संख्या में ग्राहकों के लिए मोबाइल बैंकिंग को सफलतापूर्वक सक्षम किया है। कई बैंक अपने ग्राहकों को विभिन्न क्षमताओं के साथ इंटरनेट बैंकिंग भी प्रदान करते हैं। चूंकि, ग्राहक कहीं भी, कभी भी बैंकिंग के लिए स्वतंत्र हैं, इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि मोबाइल ब्राउज़िंग के साथ–साथ सुरक्षा प्रबंधकों और विशेषज्ञों द्वारा ऐप्स का भी मजबूत नियंत्रण सुनिश्चित किया जाए। नई तकनीकों को हमेशा साइबर अपराधियों द्वारा लक्षित किया जाता है और इसलिए नए उत्पादों को मुख्य रूप से वेब फेसिंग को उचित परीक्षण के बाद शुरू करने की आवश्यकता होती है और ऐप्स विकास प्रक्रिया में सुरक्षा का ख्याल रखा जाना चाहिए।

कविता

उमंग

मुझे खुद पर गर्व होता है ...
जब मैं दिनभर मुस्कराते रहने का प्रयास करती हूँ।
रोष, क्षोभ, क्रोध सब आस–पास होते हैं ...
पर इन्हें दूर रखने का भरसक प्रयास करती हूँ।

मुझे खुद पर गर्व होता है जब मैं ...
छोटी–छोटी खुशियों में जीवन को जीने का प्रयास करती हूँ।
सभी अपनों को हँस कर, हँसाकर...
खुश रखने का प्रयास करती हूँ ।।

ऑफिस, घर और खुद में, सामंजस्य बिठाने का ...
दिन रात एक–कर, कुछ कर दिखाने का ...
परिवार और समाज के आकलन में खरा उतारने का।

मुझे खुद पर गर्व होता है जब .....
सब में न सही, पर कुछ मापदंडों में,
मैं खुद को उत्तीर्ण पाती हूँ ।।
यह गौरवान्वित एहसास, मुझमें और हम सब में है,
बस जगाने की देर है,
और खुद को समझने की देर है कि ....
कोई और नहीं,
मुझे सिर्फ मैं ही खुश रख सकती हूँ ।।

स्वाति झा
अधिकारी
रामप्रस्थ शाखा, गाज़ियाबाद

आलेख

स्वतंत्र भारत 75 वर्ष : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता

"सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता का सपना हो साकार,
बस यही है भ्रष्टाचार उन्मूलन का सही आधार"

परिचय :

हमारे भारत देश को जब 200 वर्षों की गुलामी के बाद आज़ादी मिली, तब अनेकों परेशानियां दानव रूप लिए हुए खड़ी थीं। हमें अशिक्षा, बेरोज़गारी, अज्ञानता, महंगाई आदि जैसी समस्याओं पर विजय हासिल करनी थी। लेकिन, गौर करने वाली बात यह है कि इन सभी समस्याओं से उबरने का कोई आसान और छोटा मार्ग हमने नहीं चुना। हमने चुना सत्य, अहिंसा और आत्मनिर्भरता का मार्ग। इन्हीं सिद्धांतों पर चलते हुए भारत ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की उंगली पकड़कर देश को आज़ादी दिलाई थी। यह मार्ग अत्यंत दुर्गम था, फिर भी हमारे भारत देश ने अपना मार्ग नहीं बदला और बढ़ता चला गया।

स्वतंत्र भारत 75 वर्ष :

हमारे देश भारत को आज़ाद हुए 75 वर्ष हो चुके हैं। भारत देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आज आज़ादी के 75 वर्षों के बाद भी भारत में दो विचारधारा के लोग हैं – एक वे जिनका मानना है कि भारत अभी भी भ्रष्टाचार, गरीबी, भुखमरी और पिछड़ेपन का शिकार है। और, दूसरे वे जो मानते हैं कि भारत ने आज़ादी से अब तक बहुत–सी उपलब्धियों को अपनी झोली में समेट लिया है।

गत वर्षों में, हमारे देश भारत की सभी सरकारों ने विश्व के मानचित्र पर भारत की एक अलग पहचान बनाने की कोशिश की है। हमारे देश भारत ने बहुत से क्षेत्रों में तरक्की करके कोरोना वायरस से सफल लड़ाई लड़ी और डिजिटल इंडिया मुहीम ने भारत को आत्मनिर्भर बनने में मदद की और महामारी कोविड–19 से मुकाबला करने में सक्षम बनाया। गुलामी की जंजीरों को तोड़ता हुआ भारत देश ने आत्मनिर्भर होकर वास्तव में स्वतंत्रता प्राप्त कर लिया है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान :

आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत भारत के वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री ने कोरोना संकट (वर्ष 2019–20) के दौर में भारत की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए की थी। इस अभियान के तहत उन्होंने कहा था कि इस अभियान के द्वारा भारत में लोगों को कामकाज़ करने की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी और यह कोशिश की जाएगी कि अगले कुछ वर्षों में भारत अपनी ज़रूरत की अधिकतर वस्तुएं अपने देश में ही तैयार करेगा और आत्मनिर्भर बनेगा और इसलिए इस अभियान का नाम 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' रखा गया था।

जी. अशोक कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, मदुरै

इस अभियान का अर्थ और उद्धेश्य विदेशों से भारत में आने वाली वस्तुओं पर अपनी निर्भरता को कम करना था, अर्थात् हमें ज़्यादा–से–ज़्यादा भारत में बनी हुई वस्तुओं का उपयोग करना है तथा उनकी गुणवत्ता में इतना सुधार करना है कि स्वयं भी उनका उपयोग हम कर सकें और दूसरे देशों में भी उन्हें बेच सकें।

आज भारतीयों की रोज़मर्रा के सामान की 60% आपूर्ति चीन देश करता है। अन्य देशों जैसे कि अमेरिका, कोरिया, साऊदी अरब इत्यादि से भी भारत बहुत सारा सामान आयात करता है। अपने देश का विकास करने के लिए पहले देश को आत्मनिर्भरता हासिल करनी होगी और वह तभी संभव है जब हमारे निर्यात, आयात से अधिक होंगे। यदि हम अपनी ज़रूरतों का ज़्यादातर सामान अपने देश में ही निर्मित करेंगे तभी हम आत्मनिर्भर कहलाएंगे और प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे।

भारत में आत्मनिर्भरता की शुरुआत :

भारत का इस आत्मनिर्भरता शब्द से बहुत पुराना नाता है। यह शब्द पहली बार सन् 1905 में इस्तेमाल किया गया था, जिसमें नेताओं ने अपनी जनता से अपील की थी कि वे अपने देश में बनी वस्तुओं का ही इस्तेमाल करें। इस आंदोलन के द्वारा भारतीयों से विदेशी माल का बहिष्कार और स्वदेशी माल को अंगीकार कर राष्ट्रीय शिक्षा एवं सत्याग्रह के महत्व पर बल दिया गया था। इसके बाद चौथी पंचवर्षीय योजना (वर्ष 1969–1974) में तत्कालीन प्रधान मंत्री के कार्यकाल के दौरान भी आत्मनिर्भरता पर बल दिया गया था।

आत्मनिर्भरता – 'वोकल फ़ॉर लोकल' अभियान :

आत्मनिर्भरता की ओर एक और कदम आगे बढ़ाते हुए 'आत्मनिर्भर भारत – वोकल फ़ॉर लोकल' अभियान की शुरुआत करते हुए हमारे वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री ने देश को अपने संबोधन में कहा कि कोविड–19 महामारी के कारण सारे विश्व में तालाबंदी है और सामान का आदान–प्रदान नहीं हो रहा है। इस समय में हमारी रोज़मर्रा की ज़रूरतों को आसपास के छोटे–मोटे दुकानदार पूरा कर रहे हैं। हमें ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने आसपास निर्मित स्थानीय वस्तुओं का प्रयोग करें और उनके उपयोग को प्रोत्साहित करें (vocal बनें)। लोकल सामान का इतना प्रचार करें कि वे ग्लोबल बन जाएं। इससे छोटे कारीगर और मजदूरों को प्रोत्साहन मिलेगा। इसे हमारे प्रधानमंत्री ने 'वोकल फॉर लोकल' का नाम दिया।

आत्मनिर्भर भारत के 5 स्तंभ :

- अर्थव्यवस्था– एक ऐसी इकॉनॉमी जो इन्क्रीमेंटल चेंज (वृद्धिशील परिवर्तन) नहीं बल्कि क्वांटम जंप (Quantum jump) (बड़ी उछाल) लाए।
- आधारभूत संरचना (Infrastructure)– भारत की सरकार आधारभूत संरचना में ज़रूरी निवेश पर सुधार करेगी जिससे कि स्वदेशी वस्तुएं बाहर से आने वाले उत्पादों का मुकाबला कर सकें।
- प्रशासनिक तंत्र (Administrative System)– आने वाले समय में ऑनलाइन सर्विस (e-governance) को बढ़ावा दिया जायेगा। 21वीं सदी में विकास के लिए भारत को टेक्नोलॉजी ड्रिवन सिस्टम की आवश्यकता है जिससे सरकारी कामकाज़ में पारदर्शिता बढ़ जाए और लोगों का सरकार पर और भारत पर विश्वास स्थापित हो सके।

- जनसंख्या संरचना (Vibrant demography) – भारत की जनसंख्या में 18 से 35 वर्ष की आयु के लोग सबसे ज़्यादा है, इसलिए उन्हें 'वाइब्रेंट डेमोग्राफी' नाम से संबोधित किया गया है। हमारे पास युवा शक्ति का विशाल भंडार है। इस जनसंख्या के भार को मुनाफे में तब्दील करने के लिए हमें लोगों को ज़्यादा–से– ज़्यादा काम देना होगा। उन्हें रोज़गार तभी मिल सकता है जब हम लोकल निर्मित वस्तुओं का प्रयोग करें। 'मेड इन इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देकर भारत का सामान दूसरे देशों तक पहुंचाना है।
- मांग (Demand)– 137 करोड की जनसंख्या वाले भारत देश में वस्तुओं की मांग की कोई कमी नहीं है। हमें इस भारी मांग का उपयोग अपने देश में निर्मित चीज़ों की बिक्री बढ़ाने के लिए करना है। हमें अपनी सप्लाई चेन को मज़बूत करना होगा।

इस अभियान में ₹ 20 लाख करोड़ का आर्थिक पैकेज घोषित किया गया है जो कि भारत के जीडीपी का 10% है।

20 लाख करोड़ के आत्मनिर्भर–भारत अभियान पैकेज से गरीबों को निम्नलिखित लाभ होंगे:

- एक करोड़ 70 लाख रुपए 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना' के तहत गरीबों को दिए जाएंगे।
- इंश्योरेंस प्रावरण(कवर) – स्वास्थ्य कर्मी और पुलिस, जो कोरोना कमांडोज की तरह इस कोरोना वायरस से देश के लिए लड़ रहे हैं, उन स्वास्थ्य कर्मियों को विशेष लाभ दिया जाएगा। इस योजना के तहत यदि किसी स्वास्थ्य कर्मी की इस कोरोना वायरस से लड़ाई के दौरान जान चली जाती है तो उस स्वास्थ्य कर्मी के परिवार को ₹.50 लाख दिए जाएंगे।
- 'वन नेशन, वन राशन कार्ड' योजना के तहत मज़दूर चाहे देश के किसी भी कोने में हों, वहां के राशन डिपो से अपने हिस्से का अनाज ले सकते हैं। इसका फ़ायदा उन सभी प्रवासी मज़दूरों को मिल पाएगा जो रोज़गार के लिए दूसरे राज्यों में जाते हैं।
- आठ करोड़ प्रवासी मज़दूरों के लिए ₹.500 करोड़ का प्रावधान किया जाएगा। उन सभी प्रवासी मज़दूरों को भी मुफ़्त अनाज दिया जाएगा जिनके पास राशन कार्ड नहीं है।
- गरीबी–रेखा से नीचे रहने वाले आठ करोड़ गरीब परिवार जो कि 'उज्जवला योजना' के अंतर्गत गैस सिलेंडर का इस्तेमाल कर रहे हैं, उन्हें अगले 3 महीनों तक मुफ्त में गैस सिलेंडर दिया जाएगा।
- जिन 20 करोड़ महिलाओं के पास जन–धन अकाउंट हैं, उन्हें अगले 3 महीनों तक प्रतिमाह ₹500 दिए जाएंगे।
- मनरेगा के मज़दूरों की दिहाड़ी ₹182 प्रतिदिन से बढ़ाकर ₹202 प्रति दिन कर दी गई है।
- रेहड़ी–पटरी वालों और घरों में काम करने वालों को ₹10 हज़ार तक का कर्ज़ मिल सकेगा।
- पांच हज़ार करोड़ रुपये की सहयोग राशि का ऐलान किया गया है।

आत्मनिर्भर–भारत – एमएसएमई – सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम :

'आत्मनिर्भर भारत अभियान' का मुख्य उद्धेश्य सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम वर्गीय गृह उद्योग को बढ़ावा देकर भारत से बेरोज़गारी और गरीबी को ख़त्म करना है। एमएसएमई 12 हजार करोड़ से ज़्यादा लोगों को रोज़गार उपलब्ध कराता है। इस अभियान के अंतर्गत की गई घोषणाएं इस प्रकार हैं –

- 3 लाख करोड़ के गारंटी रहित ऋण की घोषणा।
- एक साल तक ईएमआई चुकाने से मिली राहत।
- इस घोषणा से 45 लाख एमएसएमई को फायदा मिलेगा।
- इसके अलावा, सरकार ने एमएसएमई की परिभाषा पूरी तरह बदल दी है।

सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता – आजादी के 75 वर्ष में भारत की उपलब्धियां :

आज हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे कर चुके हैं। भारत ने पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान बना रखी है। भारत की गिनती अब विकासशील से विकसित देशों में होने लगी है। कोरोना वायरस जैसी भयंकर आपदा से निपटने के लिए भारत ने किसी दूसरे देश के आगे हाथ नहीं पसारे। अपने ही देश में वैक्सीन, मास्क और पीपीई किट बनाकर भारत ने पूरे विश्व को आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, ज़रूरतमंद राष्ट्रों की मदद भी की है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत भारत ने स्टार्टअप स्टैंडअप योजना बनाई जिसने हजारों बेरोज़गारों को काम दिया और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ाया। इस तरीके से अपने ही देश में वस्तुएं पैदा करके हमने चीन जैसे बड़े देश को मुंह तोड़ जवाब दिया

और उन्हें यह दिखा दिया कि भारत सच्चाई और ईमानदारी की राह पर चलते हुए किस प्रकार आत्मनिर्भर बन सकता है।

भारत ने कृषि जगत में 'हरित क्रांति' लाकर अनाज की श्रेणी में खुद को आत्मनिर्भर घोषित कर दिया। आज भारतीय किसान नई तकनीक का प्रयोग करके अतिरिक्त अनाज उगाने में सक्षम हैं और बहुत से देशों को खाद्य पदार्थ का निर्यात कर रहे हैं।

भारत ने पहिये से बैलगाड़ी और उसके बाद चंद्रयान और मंगलयान तक का सफर अपने दम पर तय किया है। भारत ने डिजिटल इंडिया प्रोग्राम के माध्यम से गांव–गांव तक स्मार्ट फोन और इंटरनेट पहुंचाया है। इस प्रोग्राम की वजह से कोरोना काल में सभी को फायदा पहुंचा। डिजिटल इंडिया की बदौलत ही डेढ़ साल के बच्चे घर बैठे पढ़ाई कर रहे हैं। ऑफिस का काम और मीटिंग बिना रुके चलती रही है, जिसे 'वर्क फ्रम होम' का नाम दिया गया। डिजिटल इंडिया की वजह से आज सब्ज़ी बेचने वालों से लेकर घरों में काम करने वाली बाई तक के पास भी स्मार्ट फोन हैं।

स्वतंत्र भारत 75 वर्ष – विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश :

भारत ने आज़ादी मिलते ही अपने वयस्क नागरिकों को वोट देकर सरकार चुनने का अधिकार दिया। आज़ादी के तुरंत बाद, अनपढ़ होते हुए भी लोगों ने बुद्धिमानी और समझदारी से अपने नेताओं को चुना। आज भारत पूरे विश्व का सबसे बड़ा और सफल लोकतांत्रिक देश है। भारत ने अपने सभी नागरिकों को स्वतंत्रता और समानता का अधिकार दिया है, जिसके तहत औरतों को बुर्के के पीछे छुपने की मजबूरी नहीं है। भारतीय महिलाएं, पुरुषों से कंधे–से–कंधा मिलाकर देश की प्रगति के लिए तत्पर हैं।

भारत ने केवल पढ़ाई के क्षेत्र में ही नहीं अपितु खेलकूद के क्षेत्र में भी बड़े–बड़े देशों को पीछे छोड़ दिया है। हमारे देश के खिलाड़ियों ने ओलम्पिक खेलों में कई स्वर्ण पदक जीतने के साथ–साथ कई कांस्य और सिल्वर पदक भी जीत कर सभी देशों से अपना लोहा मनवाया है। आज भारत तेल और पेट्रोल इत्यादि के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है। इस निर्भरता को खत्म करने के लिए भारत के बड़े–बड़े उद्यमियों ने अपने ही देश में सौर ऊर्जा पैदा करने के लिए बहुत कोशिशें की हैं। अब हम जल्दी ही ई–वी (इलेक्ट्रिक वाहनों) के क्षेत्र में भी अपने कदम बढ़ा रहे हैं।

भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से अन्य देशों को यह सबक दिया है कि भारत के शांतिप्रिय होने का यह अर्थ नहीं कि हम किसी के भी गलत बर्ताव और जुल्मों को चुपचाप सहन करेंगे। भारत के पास आज राफेल, विराट, शक्तिशाली पनडुब्बियाँ, परमाणु बम के अलावा असंख्य सैन्य शक्ति और अस्त्र–शस्त्र उपलब्ध हैं जिनके रहते कोई शत्रु हम पर आक्रमण करने की सोच भी नहीं सकता। इन सभी ने भारत को और अधिक आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाया है।

उपसंहार :

हमारे देश के प्रधानमंत्री ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' कहकर यह संदेश दिया कि भारत पूरे विश्व को अपना घर मानता है। भारत की उन्नति में सारे विश्व की उन्नति है। आत्मनिर्भर भारत का अभिप्राय यह नहीं है कि भारत सभी देशों से अपने व्यापारिक रिश्ते तोड़ देगा। भारत अपनी उन्नति में सभी को साथ लेकर चलना चाहता है। हमारा भारत देश यह चाहता है कि दूसरे देश आकर भारत में विनिवेश करें और भारत की बनी हुई वस्तुएं विश्व के हर कोने में पहुंचे।

आत्मनिर्भर भारत की भावना से प्रेरित होकर 211 गायकों ने 'जयतु जयतु भारतम्' गीत का निर्माण किया है। सुर–सम्राज्ञी श्रीमती लता मंगेशकर ने ट्विटर के द्वारा कमेंट कर यह गाना भारत की जनता और हमारे देश के प्रधानमंत्री को समर्पित किया था।

''हमारी नैतिक प्रकृति जितनी उन्नत होती है, उतना ही उच्च हमारा प्रत्यक्ष अनुभव होता है और उतनी ही हमारी इच्छाशक्ति बलवती होती है।''

– स्वामी विवेकानन्द

* * *

''असफलता से सफलता हासिल करने की आदत विकसित कीजिए। निराशा और असफलता, सफलता पाने के दो सबसे सुनिश्चित मार्ग हैं।''

– डेल कार्नेगी

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रृंखला :

आलेख

'ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता' श्रृंखला की इस पांचवीं कड़ी में हम यहां, भारत में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार 'हासिल करने वाले हिंदी भाषा की 20वीं सदी के सुप्रसिद्ध लेखक और कवि श्री सुमित्रानंदन पंत की जीवनी का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं। पंत जी यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हासिल करने वाले प्रथम हिंदी कवि थे। वे हिंदी साहित्य में 'छायावादी युग' के चार प्रमुख स्तंभों में से एक थे। निसर्ग के उपादानों का प्रतीक बिम्ब के रूप में प्रयोग उनके काव्य की विशेषता रही। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षण का केंद्र–बिंदु था। गौर वर्ण, सुंदर सौम्य मुखाकृति, लंबे घुंघराले बाल, सुगठित शारीरिक सौष्ठव उन्हें सभी से अलग मुखरित करता था।

जन्म, शिक्षा तथा विचारधारा :

सुमित्रानंदन पंत का जन्म बागेश्वर ज़िले के कौसानी नामक ग्राम में 20.05.1900 को हुआ। उनके जन्म के तुरंत बाद उनकी माँ का निधन हो जाने के कारण उनका लालन–पालन उनकी दादी ने किया। उनका नाम गोसाईं दत्त रखा गया। वह गंगादत्त पंत व सरस्वती देवी की आठवीं संतान थे। उनके पिता ने एक स्थानीय चाय बागान के प्रबंधक के रूप में कार्य किया और वे एक जमींदार भी थे, इसलिए पंत को कभी भी आर्थिक रूप से किसी प्रकार की कमी का सामना नहीं करना पड़ा। वह उसी गाँव में पले–बढ़े और ग्रामीण भारत की सुंदरता और स्वाद के प्रति हमेशा प्यार रखते थे, जो उनके सभी प्रमुख कार्यों में स्पष्ट है। 1920 में शिक्षा प्राप्त करने वे गवर्नमेंट हाईस्कूल, अल्मोड़ा गये। यहीं उन्होंने अपना नाम 'गोसाईं दत्त' से बदलकर 'सुमित्रानंदन पंत' रख लिया। 1918 में मँझले भाई के साथ काशी गये और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर कालेज की पढ़ाई के लिए इलाहाबाद (प्रयागराज) चले गए। 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधीजी के भारतीयों से अंग्रेज़ी विद्यालयों, महाविद्यालयों, न्यायालयों एवं अन्य सरकारी कार्यालयों का बहिष्कार करने के आह्वान पर उन्होंने महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बँगला और अंग्रेज़ी भाषा–साहित्य का अध्ययन करने लगे। इलाहाबाद (प्रयागराज) में ही उनकी काव्यचेतना का विकास हुआ।

सुमित्रानंदन पंत
(20 मई 1900 – 28 दिसंबर 1977)

कुछ वर्षों के बाद उन्हें घोर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इन्हीं परिस्थितियों में वह मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुए। महात्मा गाँधी के सान्निध्य में उन्हें आत्मा के प्रकाश का अनुभव हुआ। उन्होंने 1938 में प्रगतिशील मासिक पत्रिका 'रूपाभ' का सम्पादन किया। श्री अरविन्द आश्रम की यात्रा से आध्यात्मिक चेतना का विकास हुआ। 1950 से 1957 तक आकाशवाणी में परामर्शदाता रहे। 1960 में 'कला और बूढ़ा चाँद' काव्य संग्रह के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। 1961 में वे 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित हुए। 1964 में विशाल महाकाव्य 'लोकायतन' का प्रकाशन हुआ। कालान्तर में उनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। वह जीवन–पर्यन्त रचनारत रहे। अविवाहित पंत के अंतस्थल में नारी और प्रकृति के प्रति आजीवन सौन्दर्यपरक भावना रही।

वे हिंदी भाषा के सबसे प्रसिद्ध 20वीं सदी के कवियों में से एक थे और अपनी कविताओं में रूमानियत के लिए जाने जाते थे जो प्रकृति, लोगों और भीतर की सुंदरता से प्रेरित थे। सुमित्रानंदन पंत कार्ल मार्क्स और महात्मा गांधी से प्रभावित प्रकृति के कवि माने जाते हैं। उन्हें हिंदी साहित्य में, छायावादी युग के प्रमुख कवियों में से एक माना जाता है। उनका संपूर्ण साहित्य 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के आदर्शों से प्रभावित होते हुए भी समय के साथ निरंतर बदलता रहा। जहां प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य के रमणीय चित्र मिलते हैं, वहीं दूसरे चरण की कविताओं में छायावाद की सूक्ष्म

कल्पनाओं व कोमल भावनाओं के और अंतिम चरण की कविताओं में प्रगतिवाद और विचारशीलता के। उनकी सबसे बाद की कविताएं, अरविंद दर्शन और मानव कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। पंत, परंपरावादी आलोचकों और प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी आलोचकों के सामने कभी नहीं झुके। उन्होंने अपनी कविताओं में पूर्व मान्यताओं को नकारा नहीं। उन्होंने अपने ऊपर लगने वाले आरोपों को 'नम्र अवज्ञा' कविता के माध्यम से खारिज किया। वह कहते थे 'गा कोकिला संदेश सनातन, मानव का परिचय मानवपन।' पंत ने कविता, पद्य नाटकों और निबंधों सहित अट्ठाईस प्रकाशित रचनाएँ लिखीं। छायावादी कविताओं के अलावा, पंत ने प्रगतिशील, समाजवादी, मानवतावादी कविताएँ लिखने के साथ–साथ श्री अरबिंदो से प्रभावित होकर कुछ दार्शनिक कविताएँ भी लिखीं। पंत अंततः इस शैली से आगे निकल गए।

उल्लेखनीय कार्य और उपलब्धियां :

सात वर्ष की उम्र में जब वे चौथी कक्षा में पढ़ रहे थे, उन्होंने कविता लिखना शुरु कर दिया था। 1918 के आसपास तक वे हिंदी की नवीन धारा के प्रवर्तक कवि के रूप में पहचाने जाने लगे थे। 1928 में उनका प्रसिद्ध काव्य संकलन 'पल्लव' प्रकाशित हुआ। वे 1950 से 1957 तक आकाशवाणी से जुड़े रहे और मुख्य–निर्माता के पद पर कार्य किया। वाणी तथा पल्लव में संकलित उनके छोटे गीत विराट व्यापक सौंदर्य तथा पवित्रता से साक्षात्कार कराते हैं। युगांत की रचनाओं के लेखन तक वे प्रगतिशील विचारधारा से जुड़े प्रतीत होते हैं। युगांत से ग्राम्या तक उनकी काव्य–यात्रा प्रगतिवाद के निश्चित व प्रखर स्वरों की उद्घोषणा करती है। उनकी साहित्यिक यात्रा के तीन प्रमुख पडाव हैं – प्रथम में वे छायावादी हैं, दूसरे में समाजवादी आदर्शों से प्रेरित प्रगतिवादी तथा तीसरे में अरविन्द दर्शन से प्रभावित अध्यात्मवादी। 1907 से 1918 के काल को स्वयं उन्होंने अपने कवि–जीवन का प्रथम चरण माना है। इस काल की कविताएँ वाणी में संकलित हैं। पंत ज्यादातर संस्कृतकृत हिंदी में लिखते थे। सुमित्रानंदन पंत की कुछ अन्य काव्य हैं – ग्रन्थि, गुंजन, ग्राम्या, युगांत, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँदकृतियाँ, लोकायतन, चिदंबरा, सत्यकाम, आदि। उनके जीवनकाल में उनकी 28 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें कविताएं, पद्य–नाटक और निबंध शामिल हैं। पंत अपने विस्तृत वाग्मय में एक विचारक, दार्शनिक और मानवतावादी के रूप में सामने आते हैं किंतु उनकी सबसे कलात्मक कविताएं 'पल्लव' में संगृहीत हैं, जो 1918 से 1925 तक लिखी गई 32 कविताओं का संग्रह है। इसी संग्रह में उनकी प्रसिद्ध कविता 'परिवर्तन' सम्मिलित है। 'तारापथ' उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है। उन्होंने ज्योत्स्ना नामक एक रूपक की रचना भी की है। उन्होंने मधुज्वाल नाम से उमर खय्याम की रुबाइयों के हिंदी अनुवाद का संग्रह निकाला और डॉ. हरिवंश राय बच्चन के साथ संयुक्त रूप से 'खादी के फूल' नामक कविता संग्रह प्रकाशित करवाया। हिंदी साहित्य के विलियम वर्ड्सवर्थ कहे जाने वाले इस कवि ने महानायक अमिताभ बच्चन को 'अमिताभ' नाम दिया था।

सुमित्रानंदन पंत का निधन 28 दिसंबर 1977 को इलाहाबाद (प्रयागराज), उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ था। सुमित्रानंदन पंत के नाम पर उत्तराखण्ड में कुमायूँ की पहाड़ियों पर बसे कौसानी गांव में उनके पुराने घर को, जिसमें वह बचपन में रहा करते थे, 'सुमित्रानंदन पंत वीथिका' के नाम से एक संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इसमें उनके व्यक्तिगत प्रयोग की वस्तुओं जैसे–कपड़ों, कविताओं की मूल पांडुलिपियों, छायाचित्रों, पत्रों और पुरस्कारों, चश्मा, कलम आदि को प्रदर्शित किया गया है। इसमें एक पुस्तकालय भी है, जिसमें उनकी व्यक्तिगत तथा उनसे संबंधित पुस्तकों का संग्रह है। संग्रहालय में उनको मिले 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' का प्रशस्तिपत्र, हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा मिला 'साहित्य वाचस्पति' का प्रशस्तिपत्र भी मौजूद है। कालाकांकर के कुंवर सुरेश सिंह और हरिवंश राय बच्चन से किये गये उनके पत्र–व्यवहार की प्रतिलिपियां भी यहां मौजूद हैं। संग्रहालय में उनकी स्मृति में प्रत्येक वर्ष पंत व्याख्यान माला का आयोजन होता है। यहाँ से 'सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व और कृतित्व' नामक पुस्तक भी प्रकाशित की गई है। उनके सम्मान में, उनके नाम पर इलाहाबाद शहर में स्थित हाथी पार्क का नाम 'सुमित्रानंदन पंत बाल उद्यान' कर दिया गया है।

बागेश्वर ज़िले के कौसानी नामक ग्राम में स्थित सुमित्रानंदन पंत राजकीय संग्रहालय

पुरस्कार और सम्मान :

1958 में 'युगवाणी' से 'वाणी' काव्य संग्रहों की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'चिदम्बरा' प्रकाशित हुआ। उनका प्रसिद्ध काव्य संकलन 'चिदम्बरा' के लिए 1968 में उन्हें भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार 'ज्ञानपीठ' से सम्मानित किया गया था तथा 'कला' और 'बूढ़ा चांद' नामक काव्य संग्रह के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' (1960) से सम्मानित किया गया। हिंदी साहित्य सेवा के लिए उन्हें 'पद्मभूषण'(1961) तथा 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से अलंकृत किया गया।

कंठस्थ - अनुवाद आधारित सॉफ्टवेयर

'कंठस्थ' वस्तुतः ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) पर आधारित इस मशीन अनुवाद सिस्टम को दिया गया एक नाम है। ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन–साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source Language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target Language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक–साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनःप्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम.से लाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी डेटाबेस बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उनके अनुवादित वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम. का डेटाबेस उतरोत्तर बढ़ता रहता है। टी.एम. का डेटाबेस दो प्रकार का होता है : 'ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी' (जी.टी.एम.) तथा 'लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी' (एल.टी.एम.)। एल.टी.एम. प्रत्येक अनुवादक के कम्प्यूटर पर अलग–अलग होती है, जबकि जी.टी.एम. एक सामूहिक डेटाबेस है जोकि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। परीक्षण के पश्चात्, विभिन्न एल.टी.एम., जी.टी.एम. का भाग बन जाती हैं। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह सिस्टम भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के लिए विकसित किया गया है। इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेज़ी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेज़ी में अनुवाद संभव है।

सिस्टम की मुख्य विशेषताएं :

- लोकल एवं ग्लोबल टी.एम. बनाना।
- वर्क–फ्लो संयोजन।
- अनुवाद के लिए टी.एम. से पूर्ण मिलान।
- अनुवाद के लिए टी.एम.से आंशिक मिलान।
- पैकेज बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/ अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा।
- प्रोजेक्ट बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/ अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा।
- फाइल को अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/ अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा।
- अनुवादित फाइल का विश्लेषण – अनुवादित फाइलों की संख्या, पूर्ण एवं आंशिक रूप से मिले हुए वाक्यों की संख्या, प्राप्त/अप्राप्त शब्द इत्यादि की रिपोर्ट।
- एक समय–विशेष में बनाए गए पैकेज, प्रोजेक्ट तथा अनुवाद की गई फाइलों की रिपोर्ट।
- शब्दकोश संयोजन।
- वाक्यांश खोज।
- गुणवत्ता निर्धारक मानदंड।
- द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड एवं अपलोड करना।
- विभिन्न फाइल एक्सटेंशन को समर्थन।
- फाइल फॉर्मेट को यथावत रखना।

साभार - राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

आलेख

मस्ती भरा है समां

जीवन में प्रकृति के जिस रूप को आप देख नहीं पाते हैं, उसे देखने की हसरत हमेशा रहती है। यही वजह है कि जो लोग दक्षिण भारत में रहते हैं, उनके लिए हिमालय का प्रथम दर्शन दिव्य दर्शन से कम नहीं होता, वही उत्तर भारतीयों की यही दशा पहली बार समंदर देखने पर होती हैं।

हालांकि, मैं हमेशा से राजस्थान में ही पली बड़ी हूं, शिक्षा भी यही से की और फिर नौकरी भी राजस्थान में ही लगी, और बाद में शादी भी राजस्थान में ही हो गई। शादी के कुछ समय बाद मेरा स्थानांतरण जोधपुर हो गया, मैं और मेरे पति दोनों जोधपुर में ही रहने लगे। राजस्थान में रहकर भी हम दोनों ने रेगिस्तान नहीं देखा था। जैसलमेर के स्वर्णिम टीलों की खूबसूरती की बातें पढ़ी और सुनी थी, पर मौका नहीं मिल पाया था देखने का।

एक दिन अचानक ही मेरे कज़िन जिसकी शादी अभी कुछ समय पहले ही हुई थी, घूमने आने के लिए जैसलमेर आने का प्लान बताया, बस फिर क्या था मरुभूमि को पास से महसूस करने की ललक दिल में रह रहकर सर उठाने लगी।

शनिवार, शानदार चमकती सुबह, खिलती धूप सुबह–सुबह 9 बजे हम जोधपुर से जैसलमेर की ओर निकले। जैसलमेर जोधपुर से तकरीबन तीन सौ किलोमीटर दूर है, अच्छी सड़क की वजह से लगभग साढ़े चार घंटे में ही दूरी तय हो जाती है। सफर के दौरान ज्यादातर एक सीधी लकीर में चलती सड़क की दोनों ओर बबूल के पेड़ की दूर तक फैली पंक्तियां ही नज़र आती हैं। यदा–कदा रास्ते में किसी गांव की ओर जाती पगडंडी दिख जाती हैं। थोड़ी ही दूरी तय करने के बाद हमें इस सूबे मैं जनसंख्या की विरलता समझ में आ गई। वैसे भी पानी को तरसती इस बलुई जमीन पर आबादी हो भी तो कैसे?

जोधपुर से पोकरण की दूरी हमने ढाई घंटे में पूरी कर ली थी। लगभग दिन के दो बजे हम जैसलमेर पहुंच चुके थे। जैसलमेर के सोनार किले के पास काफी अच्छा और साफ सुथरा होटल मिल गया। वैसे भोजन के मामले में काफी महंगा है, क्योंकि इस रेगिस्तानी इलाकों में ज्वार, बाजरे के अलावा कुछ उपजता नहीं।

जैसलमेर की पहली शाम रेगिस्तान के मध्य में बिताने की सोची थी, इसलिए भोजन के बाद थोड़ा आराम करने के बाद ही बलुई टीले देखने निकल गए।
वैसे जैसलमेर में ज्यादा पर्यटक सम के टीले देखने ही आते हैं। यह सम के बलुई टीले लगभग जैसलमेर से 40 किलोमीटर की दूरी पर हैं। वहां तक पहुंचने के लिए काफी गाड़ियों का इंतज़ाम होता है। रास्ते में पास की झाड़ियों में कुलांचे मारते हुए ब्लैक बक भी दिखे।

माला विजय वर्गीय
एकल खिड़की परिचालक
चोपासनी रोड शाखा, जोधपुर

दिन में साढ़े तीन बजे हम सब पहुंच चुके थे। हमने जैसलमेर में रात गुज़ारने के लिए सारी सुविधाओं वाला टेंट बुक किया, वैसे इन टेंटों में वे सारी सुविधाएं होती हैं जो कि हम एक होटल में देखते हैं। टेंट बुक कराते समय एक पैकेज मिलता है जिसमें रात भर रहना, खाना और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रहते हैं। लगभग साढ़े चार बजे हम दो ऊंटों पर सवार हुए, मैं पहली बार ही ऊंट की सवारी कर रही थी। ऊंट की कुबड़ ऊपर–नीचे होते समय मुझे डर लग रहा था, आखिर मैंने पैदल चलने का निश्चय किया। थार के इस रेगिस्तानी इलाके के बारे में मेरी कल्पना यह थी कि जिस तरह समंदर में दूर–दूर तक पानी के अलावा कुछ नहीं दिखता, वैसे ही रेगिस्तान में चारों ओर रेत ही दिखती होगी, पर वास्तव में ऐसा नहीं था, बबूल की छोटी–छोटी झाड़ियां और बबूल के पेड़ भी लगे थे।

वैसे रेत की सुनहरी चादर के बीच अपने–आप को पाकर हम काफी प्रफुल्लित महसूस कर रहे थे। ऊंचाई तक फैली रेत जिसे दूर से देखने पर ऐसा लगे मानो हम पर्वत की ढलान पर हो, बलुई पर्वतों के शिखर पर चलते– चलते ऊंटों के काफिले और चारों तरफ रेत ही रेत....राजस्थान की स्मृतियों में यह छवि मेरी स्मृति में हमेशा रहती है।

जमी हुई रेत पर दौड़ने और सूखी रेत पर धसते जूतों को बाहर निकाल हम तब तक चढ़ते–उतरते रहें जब तक कि चंद्रमा ने आकाश में अपनी दस्तक नहीं दी। सूर्यास्त के समय आसमान की खुबसूरती रेत के टीलों से काफी करीब महसूस होती है और यहां आए हर पर्यटक को अपने कैमरे में कैद करने को मजबूर कर देती है। हमने भी बहुत सारे फोटो अपने कैमरे में कैद किए और सूर्यास्त के बाद हम टेंट में लौट आए। शाम को टेंट के बीचों–बीच सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हुआ। साथ ही ठंड भी काफी लगने लगी थी। राजस्थानी लोक गीतों की मिठास और पारंपरिक नृत्यों से समय यू ही बीत गया। रात्रि के भोजन का आनंद लेकर हम जैसलमेर लौट आए।

अगले दिन सुबह हमें जल्दी उठना था, क्योंकि सोनार किले पर पड़ने वाली सूर्य की पहली किरण को मैं अपने कैमरे में कैद करना चाहती थी। सोनार किला वह किला है जो कि शहर के हर कोण से दिखाई देता है। रेत में आ गिरे किसी स्वर्ण मुकुट सा लगता है यह सोनार किला।

जैसलमेर पहुंचते ही एहसास होने लगा कि क्यों इस शहर को स्वर्ण नगरी कहां जाता है, जिधर देखो उधर सुनहरे रंग की इमारतें दिखाई देती हैं, जो सूर्य का प्रकाश पड़ने पर चमकने लगती हैं।

यूं तो किला बेहद उपेक्षित और जीर्ण–शीर्ण हैं। मगर बीते दिनों की खुबसूरती की गवाह है, इसके भीतर के महल और इमारतें। किले के अंदर खूबसूरत जैन मंदिर हैं। कुछ खंडहर हैं जो अपनी बिखरती भव्यता के साथ आकर्षित करते हैं। वैसे जैसलमेर का दुर्ग अभी रिहायशी हो गया है। कई लोग इसमें स्थाई रूप से निवास करते हैं। यहां के बाजार रंग–बिरंगे और धातुओं के सामान से भरे पड़े हैं। मैंने और मेरी कज़िन ने कुछ हस्तनिर्मित पर्स लिए और वहां से लौट लिए।

किले के बाद हमें जिस जगह को देखने जाना था, वह था गड़ीसर झील। इसे जैसलमेर के संस्थापक राजा रावल जैसल ने पीने के स्त्रोत के लिए बनवाया था। झील के ठीक पास छोटा सा बाजार लगा था। आसपास लोग राजस्थानी ड्रेस में फोटो खींचा रहे थे। हम लोगों ने वहां की नाव में घूमने के लिए टिकट लिया, झील के किनारे से बंधी किंचित डगमगाती नाव में बैठ गए। नाविक ने बताया कि झील में छोटी–छोटी छतरिया हैं, वहां आयोजनों में नर्तकियां नृत्य करती थीं और राजा उसका आनंद लेते थे। झील में बहुत मछलियां थीं और बाहर उनके लिए दाना बिक रहा था। झील के पास भवन थे। हम पीले पत्थरों से बने भवनों को मंत्रमुग्ध होकर देखते रहें। झील से ही जैसलमेर ज़िले की दीवार दिखती है।

वहां से हमने पटवों की हवेली की ओर रुख किया, यहां की हवेलियां अपने–आप में आकर्षण लिए हुए होती हैं। पटवों की हवेली के अंदर पहुंचने पर प्रति व्यक्ति से ₹.100 लिए जाते हैं। पटवों की हवेलियां एक हवेली समूह हैं। सीढियों पर चढ़कर छत पर पहुंचे। दरवाज़े की ऊंचाई कम होने के कारण सिर पर चोट लगती है, इसलिए सिर बचा–बचाकर ऊपर पहुंचे, सबसे ऊपर छत पर आकर देखा कि सभी हवेलियों की छतें मिल रही हैं चारों ओर जो बेशक शानदार नज़ारा था। सामने ही किला भी पूरे ठाट–बाट से दिख रहा था।

पटवा हवेली के अंदरूनी भाग आपको कर देंगे चकाचौंध, दीवार का हर इंच या तो चांदी के दर्पणों से ढका है या उस पर रंगीन भित्ति चित्र हैं। छत भी राजस्थानी जीवन को दर्शाती, रंगीन कांच और चित्रित सीमाओं के साथ एक समान कहानी है। यहां तक कि धनुषाकार खिड़कियां और दरवाजे या तो नक्काशीदार थे या चित्रित किए गए थे। कला के इन कार्यों में कोई भी समान नहीं हैं, प्रत्येक कमरे, प्रत्येक छत, स्तंभ और द्वार इसके विषय के संदर्भ में अलग हैं।

जैसलमेर में नथमल की हवेली एक ऐसी जगह है जहां हम खरीददारी कर सकते हैं, वहां के परिवार कुछ राजस्थानी रमणीय कला व शिल्प बेचते हैं। राजस्थानी पगड़ी और मूंछ के चित्र वाली टी–शर्ट हम सभी ने यात्रा की याद के तौर पर खरीदी।

काफी शाम हो चुकी थी, घूमते–घूमते रात के विहंगम दृश्य से हम उत्साह व जोश से लबरेज हो उठे। सूनी पड़ी हुई सड़कें .... सारा नज़ारा जैसे पीले रंग की रोशनी से नहाया हुआ कमरा सा लगा। होटल पर आकर अपनी थकान दूर की और रात के भोजन का आनंद लिया दाल बाटी और चूरमे के साथ।

सुबह हमें इस खूबसूरत महकमे को अलविदा कहना था और अनायास ही मेरे मुख से निकल पड़ा कि फिर कभी मिलेंगे।

''हमें नहीं पता कि वापस इस जगह पर आएंगे कि नहीं,
नहीं पता कि ऐसा अनुभव किसी और
यात्रा में कर पाएंगे कि नहीं।
नहीं पता ऐसे आत्मीय लोग कहीं और मिल पाएंगे कि नहीं,
परन्तु इतना पता है कि इस यात्रा के
एक–एक क्षण को जीवन भर भूल पाएंगे नहीं''।।

अंचल समाचार

अहमदाबाद

दिनांक 27.11.2021 को अंचल प्रमुख एवं महा प्रबंधक श्री प्रणय रंजन देव की गरिमामयी उपस्थिति में कच्छ प्रांत के अनिवासी भारतीयों (एनआरआई) ग्राहकों के लिए एक विशेष बैठक आयोजित की गई। गुजरात का कच्छ प्रांत एनआरआई ग्राहकों के

बाहुल्य क्षेत्रों में से एक है। इस बैठक में श्री एम.पी. पांडा, सहायक महा प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट और अन्य कार्यपालकगण उपस्थित थे। इस विशेष बैठक का उद्धेश्य अनिवासी भारतीय (एनआरआई) ग्राहकों और बैंक के साथ सुदृढ़ संबंध स्थापित करना एवं अधिक से अधिक एनआरआई अभियान में तेजी लाना रहा।

चंडीगढ़

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–1(उत्तर), दिल्ली द्वारा अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ को क्षेत्र 'ख' में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2019–20 हेतु क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों के अंतर्गत 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 27.11.2021 को कानपुर में आयोजित 'एक दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह' में अंचल की ओर से श्री शैलेंद्रनाथ शीथ, उप महा प्रबंधक ने माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा एवं माननीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय के कर–कमलों से उक्त पुरस्कार के अंतर्गत 'शील्ड' और श्री प्रकाश माली, प्रबंधक (राजभाषा) ने 'प्रमाण–पत्र' ग्रहण किया। इस अवसर पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की सचिव सुश्री अंशुली आर्य व संयुक्त सचिव सुश्री मीनाक्षी जौली भी उपस्थित रहीं।

दिनांक 24.12.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत आने वाली शाखाओं तथा विभिन्न अनुभागों के राजभाषा प्रतिनिधियों के लिए 'राजभाषा प्रतिनिधि बैठक' आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री ऋषि आनंद यादव, सहायक महा प्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा की गई। सर्वप्रथम, श्री पी.एस.नेगी, प्रबंधक (राजभाषा) ने बैठक के अध्यक्ष श्री ऋषि आनंद यादव, सहायक महा प्रबंधक और उपस्थित सभी हिंदी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। क्षेत्रीय प्रमुख श्री ऋषि आनंद यादव, सहायक महा प्रबंधक ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया। उन्होंने सभी राजभाषा प्रतिनिधियों से हिंदी को दिल से अपनाने की अपील की।

हुब्बल्ली

दिनांक 30.11.2021 को अंचल कार्यालय, हुब्बल्ली में सहायक महा प्रबंधक श्री के.एन. कुलकर्णी की अध्यक्षता में बैंकर्स के लिए 'सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिन्दी में परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस परिचर्चा कार्यक्रम में

अंचल कार्यालय के मंडल प्रबंधक श्री मोहन जी. कारंत सहित विभिन्न अनुभागों के 16 कर्मचारियों ने भाग लिया और अपने-अपने विचार व्यक्त किए। परिचर्चा कार्यक्रम का संयोजन श्री डी.एम. सातपुते, राजभाषा अधिकारी द्वारा किया गया। परिचर्चा कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

मणिपाल

दिनांक 19.11.2021 को अंचल कार्यालय, मणिपाल में 116वां संस्थापक दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री रामा नायक के., महा प्रबंधक व अंचल प्रमुख द्वारा की गई। इसमें अंचल के अन्य कार्यपालकगण, सभी स्टाफ-सदस्य और चुनिंदा शाखाओं के ग्राहक उपस्थित थे। संस्थापक दिवस के शुभ अवसर पर कस्तुरबा मेडिकल कॉलेज, मणिपाल के सहयोग से अंचल कार्यालय में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। अंचल कार्यालय, मणिपाल, सीपीसी-एफटी, सीपीएच

मणिपाल, एआरएम शाखा, मणिपाल, सीजीटीएमएसई, प्रधान कार्यालय वर्टिकल और नकद प्रबंधन व लेखन सामग्री विभाग, प्रधान कार्यालय से लगभग 82 स्टाफ–सदस्यों ने रक्तदान शिविर में भाग लिया। इस अवसर पर कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत उडुपी ज़िले के स्कूलों की 24 छात्राओं को 'केनरा ज्योति छात्रवृत्ति' वितरित की गई।

रांची

दिनांक 17.11.2021 को अंचल कार्यालय, रांची द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(बैंक), रांची के तत्वावधान में श्री हितेश चंद्र गोयल, महा प्रबंधक के कुशल मार्गदर्शन में 'मेरे जीवन के अनमोल पल– अभिव्यक्ति प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सदस्य बैंकों से कुल 20 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की। निर्णायक के रूप में श्री हीरानंदन प्रसाद, एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री अजय कुमार, सहायक महा प्रबंधक एवं श्री संजीव कुमार, सहायक महा प्रबंधक भी उपस्थित थे।

श्री ओमप्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), इंडियन बैंक व सदस्य–सचिव, नाराकास(बैंक), रांची तथा सदस्य बैंकों के राजभाषा प्रभारी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री गीता राणा, प्रबंधक(राजभाषा) द्वारा किया गया।

लखनऊ

दिनांक 22.11.2021 को अंचल कार्यालय, लखनऊ द्वारा दिसंबर तिमाही के लिए 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिन्दी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री लोक नाथ, उप महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, लखनऊ द्वारा की गई। कार्यक्रम में सुश्री

उषा एस. कुलकर्णी, सहायक महा प्रबंधक, श्री दीपक सक्सेना, सहायक महा प्रबंधक, श्री संदीप सक्सेना, सहायक महा प्रबंधक, अन्य कार्यपालकगण और अंचल कार्यालय के स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे। श्री लोक नाथ, उप महा प्रबंधक ने अपने संबोधन में सॉफ्ट स्किल का महत्व और वर्तमान बैंकिंग परिवेश में इसकी आवश्यकता के बारे में सदस्यों को अवगत कराया। इसमें सभी प्रतिभागियों ने उक्त विषय के संबंध में अपने–अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन श्री मयंक पाठक, प्रबंधक(राजभाषा), अंचल कार्यालय, लखनऊ द्वारा किया गया।

मुंबई

दिनांक 26.11.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई–1 में 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री मनोज कुमार दास, क्षेत्रीय प्रमुख एवं उप महा प्रबंधक द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की

गई। क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यपालकगण श्री पी.एन. ठाकुर, सहायक महा प्रबंधक, श्री एस.के. दुबे, मंडल प्रबंधक, श्रीमती अंजली वी. लोखंडे, मंडल प्रबंधक और एम.सी.बी., श्री एस.के. पांडे, सहायक महा प्रबंधक, फोर्ट मार्केट भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर सभा को संबोधित किए। कार्यालय के सभी कर्मचारीगण कार्यक्रम में उपस्थित रहकर उक्त विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन श्री षोजो लोबो, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा किया गया।

दिल्ली

नक्षर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(बैंक), नोएडा द्वारा वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा को 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। दिनांक 23.12.2021 को श्री हेमंत कुमार हरीश, अध्यक्ष, नराकास(बैंक), नोएडा की अध्यक्षता में आयोजित नराकास की छमाही बैठक में पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री विनय कुमार, क्षेत्रीय प्रमुख एवं सहायक महा प्रबंधक, नोएडा ने केनरा बैंक की

ओर से 'शील्ड' ग्रहण किया जबकि श्री मिहिर कुमार मिश्र, प्रबंधक(राजभाषा) ने 'प्रमाणपत्र' ग्रहण किया। श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक(कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने बैठक में उपस्थित रहकर नराकास(बैंक), नोएडा के सदस्य कार्यालयों का मार्गदर्शन किया।

जयपुर

दिनांक 04.10.2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उदयपुर द्वारा श्री जितेंद्र कुमार दयाल, नराकास के अध्यक्ष एवं महा प्रबंधक, बीएसएनएल की अध्यक्षता में प्रशिक्षण केंद्र, उदयपुर के सभागार में आयोजित राजभाषा समारोह-2021 में क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु 'श्रेष्ठता पुरस्कार' प्रदान किया गया। श्री रमन कुमार सूद, मंडल प्रबंधक द्वारा केनरा बैंक की ओर से पुरस्कार ग्रहण किया गया। नराकास, उदयपुर द्वारा हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। इसमें केनरा बैंक से श्री भोम सिंह भाटी, राजभाषा अधिकारी, पुरस्कार विजेता श्री रवि चौधरी, वरिष्ठ प्रबंधक, पुरस्कार विजेता श्री दीपक कच्छवाह, वरिष्ठ प्रबंधक और नराकास के सदस्य कार्यालयों के अन्य स्टाफ-सदस्य उपस्थित थे।

दिनांक 10.11.2021 को श्री पदम सिंह रावत, मंडल प्रबंधक की अध्यक्षता में क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर में 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें श्री नितिन सिंह, मंडल प्रबंधक, सभी अनुभागों के अनुभाग प्रमुख एवं अन्य स्टाफ–सदस्य सहित खुदरा आस्ति केंद्र के स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया तथा अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए।

मदुरै

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(बैंक), मदुरै द्वारा वर्ष 2020–21 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, मदुरै को 'द्वितीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

श्री डी.सुरेंद्रन, अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, मदुरै ने नराकास, मदुरै के अध्यक्ष श्री पी. श्रीनिवास, क्षेत्रीय प्रमुख, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया व संयोजक बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै से 'शील्ड' ग्रहण किया और श्री जी. अशोक कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने 'प्रमाणपत्र' ग्रहण किया।

पटना

दिनांक 06.12.2021 को अंचल कार्यालय, पटना के सभागार में अंचल व क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के कर्मचारियों के लिए 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री श्रीकान्त एम. भन्डिवाड, महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा की गई। परिचर्चा कार्यक्रम का संचालन श्री रवि प्रकाश सुमन, प्रबंधक(राजभाषा) द्वारा किया गया। सभी प्रतिभागियों ने कथित विषय पर अपने–अपने विचार व्यक्त किए। परिचर्चा कार्यक्रम में श्री शंकर लाल, उप महा प्रबंधक, श्री उपेन्द्र

दुबे, सहायक महा प्रबंधक, श्री अभिजीत वर्धन, सहायक महा प्रबंधक, श्री बी.के. सिंह, मंडल प्रबंधक, श्री नन्दराज कुमार, मंडल प्रबंधक और अंचल कार्यालय और क्षेत्रीय कार्यालय–I पटना के अन्य कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

आगरा

दिनांक 03.12.2021 को अंचल कार्यालय, आगरा में दिसंबर 2021 तिमाही के लिए 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और

आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री एस. वासुदेव शर्मा, महा प्रबंधक द्वारा की गई। कार्यक्रम में अंचल कार्यालय से श्री ए. रत्नाकर, सहायक महा प्रबंधक, सभी मंडल प्रबंधक व अनुभाग प्रभारी और अंचल कार्यालय के अन्य स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री विजय कुमार निषाद, प्रबंधक(राजभाषा) द्वारा किया गया। उक्त कार्यक्रम में सभी स्टाफ–सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लेकर अपने–अपने विचार व्यक्त किए।

भुवनेश्वर

दिनांक 25.11.2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, संबलपुर की छमाही बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, संबलपुर को वित्त

वर्ष 2020–21 के लिए राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए 'प्रोत्साहन पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इस बैठक में श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक(कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय(पूर्व), कोलकाता द्वारा श्री अजीत कुमार जग्गा, सहायक महा प्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख को 'शील्ड एवं प्रमाण पत्र' प्रदान किया गया। नराकास के प्रभारी अध्यक्ष द्वारा श्री विश्वनाथ प्रसाद साहू, राजभाषा अधिकारी को राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए 'प्रशस्ति –पत्र' प्रदान किया गया।

दिनांक 29.12.2021 को आज़ादी के 75वें वर्षगांठ के उपलक्ष्य में बैंक के ग्राहकों एवं सामान्य जनता को स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान देने वाले देश भक्तों की अमर कहानियों के बारे में अवगत कराने के लिए श्री अजीत कुमार जग्गा, सहायक महा प्रबंधक, क्षेत्रीय

कार्यालय, संबलपुर के कुशल मार्गदर्शन में क्षेत्राधीन बरगढ़ शाखा I एवं II के सहयोग से बरगढ़ नगर में 'नुक्कड़ नाटक' का आयोजन किया गया। इसमें श्री दीपक कुमार जुनेजा, वरिष्ठ प्रबंधक, बरगढ़ शाखा–I के शाखा प्रमुख श्री अंजन कुमार साहू, बरगढ़ शाखा–II के शाखा प्रमुख श्री देवसहाय केरकेट्टा व श्री विश्वनाथ प्रसाद साहू, राजभाषा अधिकारी आदि उपस्थित थे।

करनाल

अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा दो दिवसीय 'केन–उत्सव' का आयोजन दिनांक 02.11.2021 से 03.11.2021 तक किया गया जिसमें महिला उद्यमियों द्वारा बनाए गए सामान की भव्य प्रदर्शनी लगाई गई। इस कार्यक्रम में 35 से अधिक स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती सी.एस.

विजयलक्ष्मी, अंचल प्रमुख एवं महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा किया गया। अंचल प्रमुख ने कार्यक्रम में लगाई गई सभी प्रदर्शनियों का अवलोकन किया तथा सभी महिलाओं को शुभकामनाएं देते हुए भविष्य में भी इस दिशा में आगे बढ़ने के प्रति प्रोत्साहित किया।

तिरुवनंतपुरम

वर्ष 2018–19 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(बैंक), तिरुवनंतपुरम को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यनिष्पादन के लिए 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। दिनांक 04.12.2021 को हैदराबाद में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित भव्य समारोह के दौरान श्री संजय कुमार मिश्र, उप महा प्रबंधक एवं

अध्यक्ष नराकास(बैंक), तिरुवनंतपुरम तथा श्री मनेष मोहन, सदस्य सचिव, नराकास(बैंक), तिरुवनंतपुरम एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, तिरुवनंतपुरम द्वारा क्रमशः शील्ड और प्रमाण पत्र ग्रहण किया गया।

दिनांक 14.12.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय–I, एरणाकुलम में श्रीमती अन्नम्मा साइमन, उप महा प्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख की अध्यक्षता में 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और

आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में सभी अनुभागों के कर्मचारियों ने भाग लेकर अपने–अपने विचार व्यक्त किए।

मंगलूरु

दिनांक 19.11.2021 को अंचल कार्यालय, मंगलूरु में बैंक का 116वां संस्थापक दिवस सहित बैंक के संस्थापक श्री अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै की 169वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर

श्री योगीश बी. आचार्य, महा प्रबंधक व अन्य कार्यपालकगण सहित अन्य स्टाफ–सदस्य भी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि श्री येनेपोया अब्दुल्ला कुन्ही, येनेपोया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चांसलर और श्रीमती उषाप्रभा एन. नायक, सह–संस्थापक और एक्सपोर्ट ग्रूप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के उपाध्यक्ष को समाज के प्रति उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

पुणे

दिनांक 23.11.2021 को अंचल कार्यालय, पुणे के विभिन्न अनुभागों में पदस्थ 'राजभाषा प्रतिनिधियों की वार्षिक बैठक' का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री राम बाबू मिश्र, सहायक महा प्रबंधक द्वारा की गई। इसमें अंचल कार्यालय के सभी

अनुभागों से कुल 13 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्री राम बाबू मिश्र, सहायक महा प्रबंधक ने अपने दैनंदिन आंतरिक कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने और समय पर तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आग्रह किया। श्री अविनाश कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा प्रतिभागियों को राजभाषा नियम, अधिनियम, राजभाषा प्रतिनिधियों की भूमिका आदि के बारे में जानकारी प्रदान कर राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया गया।

विजयवाड़ा

दिनांक 24.11.2021 को अंचल कार्यालय, विजयवाड़ा के सम्मेलन कक्ष में 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती के. कल्याणी, महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, विजयवाड़ा द्वारा की गई। इस कार्यक्रम

में श्री प्रवीण कुमार सिंह, उप महा प्रबंधक और अंचल कार्यालय, विजयवाड़ा के सभी कार्यपालक, अनुभाग प्रमुख और अधिकारी–गण उपस्थित थे। श्री मेकला बापु, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) ने परिचर्चा कार्यक्रम का संचालन किया। परिचर्चा में सभी प्रतिभागियों द्वारा सक्रिय रूप से भाग लिया गया।

चेन्नई

दिनांक 01.11.2021 को 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के समापन कार्यक्रम का आयोजन श्री श्रीकांत महापात्र, महा प्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर श्री अजय कुमार सिंह, उप महा प्रबंधक, श्री के. शिव कुमार, सहायक महा प्रबंधक, श्री

रामकुमार, मंडल प्रबंधक व अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान अंचल कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों ने सतर्कता दिवस के अवसर पर सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा ली।

बेंगलूरु

दिनांक 23.12.2021 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरू में 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री बृजेश कुमार पाठक, मंडल प्रबंधक द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। इस अवसर पर मंडल प्रबंधक श्री सुधीर कुमार जायसवाल और श्री

प्रकाश कुमार सहित सभी अनुभागों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। श्री ओमप्रकाश साह, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) द्वारा कार्यक्रम का संयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों द्वारा अपने–अपने अनुभवों का साझा किया गया और उक्त विषय संबंधी कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई।

गुवाहाटी

दिनांक 18.12.2021 को डिब्रूगढ़ में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार समारोह में केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, गुवाहाटी को वर्ष

2017–18 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए 'तृतीय पुरस्कार' के रूप में राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

केनरा बैंक के '116वें संस्थापक दिवस' के उपलक्ष्य में दिनांक 19.11.2021 को अंचल कार्यालय, गुवाहाटी द्वारा 'कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' कार्यक्रम के तहत गुवाहाटी के पाथर क्वेरी

स्थित 'आमार घर' नामक वृद्धाश्रम के लोगों को इलेक्ट्रिक केटल, हॉट वाटर बैग तथा मिठाई का पैकेट वितरित किए गए। यह कार्यक्रम श्री शेख़ नज़ीर अहमद, अंचल प्रमुख व महा प्रबंधक के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में अंचल कार्यालय के श्री सुनील कुमार, सहायक महा प्रबंधक व अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

हैदराबाद

दिनांक 24.12.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद–I में दिसंबर 2021 तिमाही के लिए 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती ममता

जोशी, उप महा प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबार – I द्वारा की गई। इस अवसर पर श्रीमती भाग्य रेखा एस.के., सहायक महा प्रबंधक, श्री तिरुमल प्रसाद, मंडल प्रबंधक और सभी अनुभाग के स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती राखी भार्गव द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

कोलकाता

केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार, अंचल कार्यालय, कोलकाता में 'स्वतंत्र भारत 75 : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता' उद्धेश्य के साथ दिनांक 26.10.2021 से दिनांक 01.11.2021 तक 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' कार्यक्रम का आयोजन किया

गया। दिनांक 26.10.2021 को श्री संदीप जे. गवारे, मुख्य महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, कोलकाता के कुशल मार्गदर्शन में इस वर्ष की थीम 'स्वतंत्र भारत 75 : सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता' के साथ सभी स्टाफ–सदस्यों द्वारा सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा लेते हुये सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारंभ किया गया । इस अवसर पर अंचल कार्यालय व आंचलिक निरीक्षणालय के कार्यपालकगण सहित

अंचल कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय, ओवरसीज़ शाखा, प्राइम कॉपोरेट शाखा व अन्य कार्यालयों के स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे।

भोपाल

दिनांक 23.11.2021 को अंचल कार्यालय, भोपाल में 'बैंकर्स के लिए सॉफ्ट स्किल्स का महत्व और आवश्यकता' विषय पर हिंदी में परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आर.आर. तारा, उप महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, भोपाल द्वारा की गई। कार्यक्रम में अंचल कार्यालय से श्री सुनील कुमार शर्मा, उप महा प्रबंधक, श्री अरुण श्रीवास्तव, सहायक महा प्रबंधक, श्री प्रवीण कुमार कक्कड़, सहायक महा प्रबंधक, सभी

अनुभाग प्रमुख और अन्य स्टाफ–सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों की सक्रिय प्रतिभागिता रहीं। परिचर्चा का संचालन निरुपमा सिंह, प्रबंधक(राजभाषा) द्वारा किया गया।

अध्ययन व विकास शीर्ष, केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान, मणिपाल

दिनांक 29.12.2021 से 30.12.2021 तक केनरा बैंक प्रबंधन संस्थान (सीआईबीएम), मणिपाल में राजभाषा अधिकारियों के लिए 'दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला' का आयोजन किया गया। श्री के.वी.एन. मूर्ति, महा प्रबंधक, सीआईबीएम, मणिपाल, श्री एच.के. गंगाधर, मुख्य शिक्षण अधिकारी एवं उप महा प्रबंधक, अध्ययन व विकास शीर्ष, केनरा बैंक और श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, राजभाषा अनुभाग, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर बैंक के संस्थापक श्री अम्मेम्बाल सुब्बाराव पै की छवि पर श्रद्धा–सुमन अर्पित किए गए। श्री के.वी.एन. मूर्ति, महा प्रबंधक, सीआईबीएम, श्री एच.के. गंगाधर, मुख्य शिक्षण अधिकारी एवं उप महा प्रबंधक, अध्ययन व विकास शीर्ष और श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक द्वारा राजभाषा अधिकारियों को संबोधित किया गया।

श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक और श्री बिबिन वर्गीस, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), प्रधान कार्यालय द्वारा 'राजभाषा नीति व नियम', श्री ओ.पी. अग्रवाल, भूतपूर्व अधिकारी, भारतीय रिज़र्व बैंक, नई दिल्ली द्वारा 'राजभाषा के क्षेत्र में तकनीकी का प्रयोग', श्री एच.एन. सिंह, भूतपूर्व निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'प्रयोजनमूलक हिंदी तथा अनुवाद', श्री प्रवीन राय, मंडल प्रबंधक, सीआईबीएम द्वारा 'सामान्य बैंकिंग–ऋण वितरण में मृदु कौशल का प्रयोग' विषय पर सत्र लिए गए। श्री एस. शंकर, मुख्य महा प्रबंधक, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय द्वारा राजभाषा अधिकारियों को पॉलिकोम के माध्यम से संबोधित कर मार्गदर्शन दिया गया।

आलेख

कमिटमेंट, कैपिटल गेन और क्रेटा

बात है पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक ग्रामीण इलाके की। एक बड़े चौधरी साहब ने बड़ी गाड़ी खरीदने का मन बनाया और पहुँच गए गाँव के सरकारी बैंक की शाखा में। प्रबंधक से बोले 'मैनेजर साहब, क्रेटा लेनी है। बताओ, कै कागज़ लागेंगे'?

प्रबंधक महोदय बोले – 'अरे चौधरी साहब! कागज़ हो जायेंगे। आप बताओ कब लेनी है क्रेटा? बढ़िया पसंद है आपकी। गाड़ी जंचेगी। चुनाव भी आ रहे हैं'।

अभिभूत हुए चौधरी साहब ने कहा – 'हाँ हाँ! अब की बार परचा भी भरेंगे। गाड़ी हमें आप कल ही दिला दो'।

प्रबंधक ने बात आगे बढ़ाई – 'फिर ऐसा करो, तीन साल की इनकम टैक्स की रिटर्न (आईटीआर) मँगवा लो। ज़रूरत तो नहीं है, मगर कागज़ी कार्रवाई है, एक गारंटर ले लेंगे किसी को भी और डॉक्युमेंट यहीं ब्रांच में भर लेंगे। कल दस्तखत करके डी डी ले जाना आप।

चौधरी साहब बोले – 'बात पक्की है ना मैनेजर साहब'?

प्रबंधक ने कहा – 'हाँ हाँ! आपके गाँव में नौकरी करनी है भाई'!

दोनों ज़ोर–ज़ोर से हँस पड़े और चौधरी साहब ने विदा ली।

चौधरी साहब अगले ही दिन आईटीआर और एक अदद गारंटर के साथ शाखा पहुँच गए। उन्होंने गाँव भर में ढिंढोरा पीट दिया। डीलर को फोन कर दिया अलग से। ब्रांच से भी लोगों को फोन करके कह रहे थे: 'गाड़ी ले कर आ रहा हूँ, क्रेटा'। प्रबंधक ने चाय पानी पूछा और अफसर को डॉक्युमेंट्स देते हुए कहा, 'चौधरी साहब को डीडी देना है मैडम'। अफसर ने आईटीआर जाँचने पर पाया कि चौधरी साहब के सीए ने इनकम टैक्स एक्ट 1961 के तहत सेक्शन 44 एडी में 'कैपिटल गेन' दिखाया है। चूँकि, चौधरी साहब की कोई नियमित आय (रेगुलर इनकम) नहीं थी, इसलिए यह ऋण दे पाना संभव न था। अब तक चौधरी साहब और शाखा प्रबंधक बेचैन हो चुके थे। 'ये मैडम कागज़ उलट–पलट के देख क्या रही थीं? डीडी क्यों नहीं दिया अब तक?

अफसर ने आईटीआर में फँसा कैपिटल गेन का पेंच प्रबंधक को समझाया। पर वह सुनने को राज़ी न थे। उस पर से चौधरी साहब का पारा चढ़ गया। प्रबंधक से बोले: 'यो बात आपकी ठीक नहीं है साहब। गाड़ी ना आई तो म्हारी तो बेइज़्ज़ती हो जावेगी। बुरा मत मानियो, आपकी चलती कोई ना। तमाशा बन चुका था।' प्रबंधक ने लगभग धमकाते हुए कहा: 'मैं कह रहा हूँ ना मैडम, लोन क्यों नहीं कर रही आप'?

टीना
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय – II, पुणे

अफसर ने कहा: 'ठीक है सर, मैं अपनी बात डॉक्युमेंट पर लिख देती हूँ, फिर आपका डिस्क्रिशन'।

तमतमाते हुए प्रबंधक ने क्षेत्रीय कार्यालय के अग्रिम अनुभाग में मैडम की शिकायत करने के लिए फोन मिलाया। पूरा मामला समझने पर अग्रिम अनुभाग ने इस विषय में अफसर का पक्ष सही ठहराया और नियमित आय का होना ऋण के लिए एक आवश्यक शर्त माना। संतुष्ट होने पर प्रबंधक ने चौधरी साहब को ऋण के लिए मना किया।

चौधरी साहब ने तमक कर कहा: 'लोन तो मैं करा ही लूँगा, यहाँ से ना सही, कहीं और से सही। अब गाड़ी से ही आऊँगा मैनेजर साहब'।

फिर बाद में क्या हुआ? चौधरी साहब का लोन किसी अन्य बैंक से भी ना हुआ। मगर गाड़ी वो ले आये, बाहर से ब्याज पर पैसे उठा कर। प्रबंधक साहब अब उस अफसर से सलाह किये बिना कमिटमेंट नहीं करते। और अफसर? वह बिना दबाव, बिना भय के निरंतर अपनी जानकारी को बढ़ाते हुए अपेक्षानुसार बैंक के हित में कार्यनिष्पादन करना अपना परम कर्तव्य समझती है।

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय द्वारा दिनांक 08.12.2021 को प्रधान कार्यालय का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण के अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं श्री भीम सिंह, उप निदेशक(राजभाषा), वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, श्री शंकर एस., मुख्य महा प्रबंधक, मा सं विभाग व श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मा सं विभाग।

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय द्वारा दिनांक 08.12.2021 को प्रधान कार्यालय का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण के अवसर पर श्री भीम सिंह, उप निदेशक(राजभाषा), वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए। साथ में श्री शंकर एस., मुख्य महा प्रबंधक, मा सं विभाग व श्री एच.एम. बसवराज, उप महा प्रबंधक, मा सं विभाग भी दिखाई दे रहे हैं।

केनरा बैंक
भारत सरकार का उपक्रम

Canara Bank
A Government of India Undertaking

सिंडिकेट Syndicate

Together We Can

आवास ऋण ब्याज दर में कमी
ऋण राशि पर ध्यान दिए बिना

आज़ादी का अमृत महोत्सव

केनरा आवास ऋण

घर की खरीद / निर्माण / विस्तार / मरम्मत या नवीकरण

- चुकौती अवधि 30 वर्षों तक
- अपने मौज़ूदा आवास ऋण को केनरा बैंक में अंतरित करें
- पीएमएवाई के तहत ₹2.67 लाख तक की सब्सिडी प्राप्त करें

ब्याज दर
6.65%
सालाना
सीमित अवधि की पेशकश

शून्य
प्रसंस्करण और दस्तावेज़ीकरण शुल्क

केनरा वाहन ऋण

कम और आकर्षक ब्याज दर

- वित्तपोषण: ऑन-रोड मूल्य के 90% तक
- महिलाओं के लिए रियायती ब्याज दर
- चुकौती अवधि : 7 साल

शर्तें लागू

canarabank | canarabankofficial | canarabankinsta

एसएमएस <Product code SPACE (Name)> to 9591504466 | Product codes: HL : Home Loan, VL : Vehicle Loan

कॉल केनरा ☎ 1800 425 0018 www.canarabank.com